सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक) 50 युएस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

जुलाई, 2018 वर्ष 17 अंक 05

प्यारे नबी पे अपने हम सब पढ़ें सलाम

हज को जो जा रहे हैं, हैं खुश नसीब भाई
रौज़े पे होंगे हाज़िर, हैं खुश नसीब भाई
वह बा अदब पढ़ेंगे, रौज़े पे जब सलाम
नेकी के लिखने वाले, लिख लेंगे उन के नाम
मक्का पहुंच के पहले, उमरा वह वां करेंगे
हज के दिनों में पूरे, अरकाने हज करेंगे
मक़्बूल हज हों उनके, अपनी दुआ यही है
वह भी दुआ दें हम को, इस का सिला यही है
प्यारे नबी से अपने,हम सब पढ़ें सलाम
आल और अस्हाबे नबी पर भी हों सलाम

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। SACHCHARAHI A/c. No. 10863759642 IFS Code: SBIN0000125 Swift Code: SBININBB157 State Bank of India, Main Branch, Lucknow. और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें। बराये करम पैसा जमा हो जाने के बाद दफ़्तर के फोन नं0 या ईमेल पर खरीदारी नम्बर के साथ इत्तिला ज़रूर दे दें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	09
हज़ व ज़ियारत का सफर	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	11
इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	16
आदर्श शासक	मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी	18
नमाज़ की हक़ीक़त व अहम्मीयत	मौलाना मंजूर नोमानी रह0	21
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	24
हिज्जतुल वदाअ़ में इंसानियत	मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी	32
तड़प	नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी	40
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुर्आन की शिक्षा

–मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-माइदाः

अनुवाद–

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालू है।

ऐ ईमान वालो! अपने अहद व पैमान (प्रतिज्ञाओं व समझौतों) को पूरा करो[2], तुम्हारे लिए मवेशी चौपाए जानवर हलाल वैध किये गए हैं[3], सिवाय उन चीज़ों के जो तुम्हें आगे बताई जाएंगी हां तुम एहराम की हालत में शिकार को जायज़ (बैध) मत समझो बेशक अल्लाह जो चाहता है आदेश करता है[4],(1) ऐ ईमान वालो! अल्लाह के शआएर (निशानियों) का अनादर मत करना[5], और न आदर के महीनों[6], का और न कुर्बानी के जानवर का और उन जानवरों का जिनके गलों में पट्टे पड़े हों[7], और न प्रतिष्ठित घर (कअ़बा) को जाने वालों का जो अपने पालनहार के फ़ज़्ल (कृपा) और प्रसन्नता को चाहने वाले हैं और जब तुम एहराम (हज का वस्त्र) उतार दो तो शिकार कर सकते हो और तुम्हें किसी क़ौम की दुश्मनी कि उन्होंने तुम्हें मस्जिद–ए–हराम से रोका तुम को ज्यादती पर उभार न दे[8], और (देखो) भलाई और तक़्वे (के कामों) में आपस में एक दूसरे की मदद किया करो और पाप व सरकशी में एक दूसरे की मदद मत करना और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह कठोर दण्ड देने वाला है(2) तुम पर हराम हुआ मुर्दा और ख़ून और सुअर का गोश्त और जिस पर अल्लाह के अलावा किसी और का नाम लिया गया और जो घुट कर मरा या चोट से या गिर कर या सींग मारने से और जिस को दरिन्दे (हिंसक) पशु ने फाड़ खाया, सिवाय इसके कि तुम ने उसको मरने से पहले ज़ब्ह कर लिया हो[9], और जिसको पूजे जाने वाले पत्थरों पर ज़ब्ह किया गया हो और यह कि तुम जूवे के तीरों से फ़ाल निकालो यह सब नाफ़रमानी (अवज्ञा) की बातें हैं, आज काफ़िर तुम्हारे दीन से निराश हो चुके तो उनसे मत डरो और मुझ ही से डरो, आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेअ़मत (सुख–सामग्री) पूरी कर दी और दीन के रूप में तुम्हारे लिए इस्लाम को पसंद कर लिया[10], फिर जो भूख से व्याकुल हो गया पाप की ओर इच्छा किये बिना तो बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बड़ा ही दयालु है[11](3) वे आपसे पूछते हैं कि उनके लिए क्या क्या चीज़ें हलाल हैं, आप कह

दीजिए कि तुम्हारे लिए तमाम पाक चीज़ें हलाल की गई हैं और जिन शिकारी जानवरों को तुमने अल्लाह के बताये हुए तरीक़े के अनुसार सिखा सिखा कर सधा लिया तो जो वे तुम्हारे लिए रख छोड़ें उसमें से खाओ और उस पर अल्लाह का नाम ले लिया करो और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है[12](4) आज तुम्हारे लिए तमाम पाक चीज़ें हलाल कर दी गईं और अहल–ए–किताब का खाना तुम्हारे लिए जायज़ है और तुम्हारा खाना उनके लिए जायज़ है और इसी तरह ईमान वाली पाक दामन औरतें और उन लोगों की पाक दामन औरतें जिनको तुमसे पहले किताब मिल चुकी है (तुम्हारे लिए जायज़ हैं) जब तुम उनको निकाह की पाकी में लेते हुए उनका महर दे दो, मस्ती निकालते हुए नहीं और न चोरी छिपे प्रेम करते हुए और जो ईमान से इनकार करेगा तो उसका सब किया धरा बर्बाद हुआ और वह आखिरत में घाटा उठाने वालों में है[5](5) ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज के लिए उठो तो अपने चेहरों और हाथों को कोहनियों समेत धो लिया करो और अपने सिरों का मसह कर लिया करो और पैरों को टख़नों समेत धो लिया करो और अगर तुम जनाबत (अपवित्रता) की हालत में हो यात्रा पर हो या तुम ने औरतों से संभोग किया हो फिर तुम्हें पानी न मिले तो पवित्र मिट्टी से तयम्मुम करो और उससे अपने चेहरे और हाथों पर मसह कर लो, अल्लाह तुम्हें बिल्कुल तंगी में डालना नहीं चाहता हां वह यह चाहता है कि तुम्हें पवित्र कर दे और अपनी नेअमत और उस अहद को याद करो जो तुम से लिया गया और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह दिलों के हाल खूब जानता है[13](5) ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो अपने चेहरों और हाथों को कोहनियों समेत धो लिया करो और अपने सिरों का मसह कर लिया करो और पैरों को टख़नों समेत धो लिया करो और अगर तुम जनाबत की हालत में हो तो अच्छी तरह पवित्र हो लो, और अगर तुम बीमार हो या यात्रा पर हो या तुम में से कोई इस्तिन्जा (शौच) करके आया हो या तुमने औरतों से संभोग किया हो फिर तुम्हें पानी न मिले तो पवित्र मिट्टी से तयम्मुम करो और उससे अपने चेहरे और हाथों पर मसह कर लो, अल्लाह तुम्हें बिल्कुल तंगी में डालना नहीं चाहता हां वह यह चाहता है कि तुम्हें पवित्र कर दे और अपनी नेअमत तुम पर मुकम्मल कर दे, शायद कि तुम शुक्र करने लग जाओ[14](6) और अपने ऊपर अल्लाह की नेअमत और उस अहद को याद करो जो तुम से लिया था जब तुमने कहा था कि हमने सुना और मान

लिया और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह दिलों के हाल को खूब जानता है[15](7) ऐ ईमान वालो! इन्साफ़ के साथ गवाही देने को अल्लाह के लिए खड़े हो जाया करो और किसी क़ौम की दुश्मनी तुम्हें इस पर उभार न दे कि तुम इन्साफ़ न करो, इन्साफ़ करते रहो यही तक़वा से ज़ियादा निकट है और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह तुम्हारे कामों से खूब अवगत है[16](8) उन लोगों से अल्लाह का वादा है जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये कि उनके लिए मग़फ़िरत (माफ़ी) है और बड़ा सवाब है(9)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

2. ईमान वास्तव में अल्लाह के सारे कानूनो और आदेशों के मानने और समस्त अधिकारों को अदा करने का एक अहद है।

3. यहूदियों की शरारतों का परिणाम था कि बहुत सी हलाल चीज़ें उन पर हराम कर दी गईं। इस उम्मत के लिए वह चीज़ें हलाल की गई हैं जैसे ऊँट, गाय, भेड़, बकरी और इस जाति के सारे पालतू जानवर और जंगली जानवर जैसे हिरन, नील गाय आदि सिवाय उनके जिनको आगे इसी सूरह में बयान किया जाएगा।

4. इस वाक्स ने सारी आपत्तियों की जड़ ही उखाड़ कर रख दी जो अपनी बुद्धि से कहते हैं फुलां जानवर क्यों हलाल है और फुलां क्यों हराम है, अल्लाह जो चाहे आदेश दे हर चीज़ उसकी हिकमत से भरी है वह हमारी बुद्धि में आए या न आये।

5. अल्लाह के "शआएर" यानी वे चीजें जो अल्लाह की महानता की विशेष निशानियां करार दी गई हैं यानी हरम, बैतुल्लाह, सफा व मरवह, जमारात, मस्जिदें, कुर्बानी का जानवर, आसमानी किताबें वगैरह।

6. विशेष रूप से ज़िल्हिज्जह और दूसरे आदर के महीने ज़ीक़ादह, मुहर्रम और रजब, इनका आदर यह है कि तक़वा अपनाएं और विशेष रूप से हाजियों का ख़्याल रखें।

7. कुर्बानी के जानवर के गले में निशानी के रूप में पट्टा डाल देते थे।

8. सुल्हे हुदैबिया के अवसर पर मुश्रिकों ने उमरे से रोका तो दुश्मनी में हद से आगे मत बढ़ जाना, इस्लाम में हर चीज़ की सीमाएं निर्धारित हैं दुश्मन के साथ भी किसी प्रकार की ज़ियातदी जायज़ नहीं।

9. ज़ब्ह के अलावा जानवर किसी तरह भी मर जाए वह हराम है।

10. काफिर लोग इससे निराश हो चुके कि तुम को तुम्हारे दीन से फेर दें और अंसाब व अज़लाम (चढ़ावे) व मूर्तिपूजा की ओर ले जाएं, दीन मुकम्मल हो चुका अब उसमें संशोधन की संभावना नहीं, अल्लाह की नेअमत पूरी हो चुकी अब किसी दूसरी ओर देखने की आवश्यकता नहीं और क़यामत तक के लिए इस्लाम को संपूर्ण मानव जाति के लिए पसंद कर लिया गया, अब सफलता इसी पर निर्भर है, इन हालात में तुम्हें डरने की ज़रूरत नहीं वे तुम्हारा कुछ बिगाड़ सकते, हां उस वास्तविक एहसान करने वाले

से डरते रहो जिसके हाथ में तुम्हारी सफलता और असफलता है, यह आयत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अंतिम हज (हज्जतुल–विदा) के अवसर पर उतरी जब एक लाख से ऊपर सहाबा आपके साथ थे और तेईस वर्षीय मेहनत के परिणाम सामने थे, दिन भी अरफ़े और जुमे का था इसी लिए जब किसी यहूदी ने हज़रत उमर रज़ि0 से कहा, "अगर यह आयत हमारे यहां उतरती तो हम ईद मनाते, हज़रत उमर रज़ि0 ने कहा कि जिस दिन यह आयत उतरी वह दो ईदों का दिन था अरफ़ा भी था और जुमा भी।

11. हलाल व हराम का कानून तो पूरा हो चुका अब अगर कोई विवश हो तो जान बचाने की हद तक हराम खा सकता है अल्लाह उसको माफ़ कर देंगे लेकन अगर इसमें केवल इच्छा हुई तो यह सख़्त गुनाह की बात है।

12. ह़राम चीज़ों के बाद यह सवाल हुआ कि हलाल चीज़ें क्या क्या हैं, इसका जवाब हुआ कि इसका क्षेत्र बहुत बड़ा है जो भी साफ़ सुथरी चीज हो और उसमें कोई नुक़सान न हो जायज़ हैं, कुछ लोगों ने शिकारी जानवर के बारे में सवाल किया था उसका विस्तार से जवाब है और चार शर्तों के साथ शिकारी जानवर के शिकार को जायज़ कहा गया, कि वह जानवर प्रशिक्षित हों, दूसरे यह कि शिकार के लिए छोड़े जाएं, तीसरे यह कि वे खुद उसमें से न खाएं, चौथे यह कि छोड़ते समय अल्लाह का नाम लिया जाए।

13. अहल–ए–किताब के साथ दो विशेषताएं बरती गईं एक उनके ज़ब्ह किये हुए जानवर को हलाल रखा गया दूसरे उनकी औरतों से निकहा को जायज़ क़रार दिया गया लेकिन इस युग के यहूदी और ईसाई चूंकि बिल्कुल अपने दीन से हट गए हैं इसलिए बचना बेहतर है विशेष रूप से उनकी औरतों से शादी ईमान के लिए घातक हो सकती है इसलिए इससे बहुत बचने की ज़रूरत है, साथ साथ यह भी स्पष्ट किया जा रहा है कि विवाह का मक़सद पारिवारिक व्यवस्था वजूद में लाना हो काम वासना मक़सद न हो और न बिना निकाह के ग़लत संबंध स्थापित किये जाएं।

14. वुज़ू की ज़रूरत बार बार पड़ती है इसलिए इसमें खुले हुए अंगों को बार बार धोने का आदेश है लेकिन अगर जनाबत हो तो गुस्ल ज़रूरी है और अगर गुस्ल या वुज़ू के लिए पानी न मिल सके या उसका इस्तेमाल नुक़सानदायक हो तो तयम्मुम की इजाज़त दी गई, यह अल्लाह की ओर से आसानी और मेहरबानी है।

15. शायद सूरह बक़रह की अंतिम आयतों की ओर इशारा है जिसमें ईमान वालों ने कहा था कि "समेअ्ना व अतअ्ना" (हमने सब आदेश सुन लिए और हम सब स्वीकार करते हैं)।

16. ऐसा न्याय व इन्साफ़ जिसे कोई दोस्ती और दुश्मनी न रोक सके और जिसे अपनाने से मुत्तक़ी बनना सरल हो जाता है उसको प्राप्त करने का एक मात्र साधन खुदा का डर और उसके बदला लेने का भय है और यह खौफ़

शेष पृष्ठ....10 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

शगुन और रमल का बयानः-

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है फरमाते थे कि हर चित्रकार को जो दुन्या में तस्वीरें बनाते हैं कियामत में उनको मजबूर किया जायेगा कि इस तस्वीर में जान डालो लेकिन वह हरगिज जान न डाल सकेंगे। (बुखारी—मुस्लिम)

हजरत इब्ने मस्ऊद रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है फरमाते थे कि कियामत में अल्लाह के नज़दीक लोगों में सबसे जियादा सख्त तरीन अ़ज़ाब के लायक चित्रकार होंगे।

(बुखारी—मुसिलम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि अल्लाह तआला फरमाता है उस आदमी से जियादा जालिम (गुनहगार) कौन है जो मेरी तरह पैदा करना चाहता है अगर उनको पैदा करने का दावा है तो जरा एक चींटी ही पैदा कर के दिखा दे या एक दाना पैदा कर दे, या एक जौ, पैदा कर दे। (बुखारी—मुस्लिम)

जिस घर में कुत्ता या चित्र हो वहां फरिश्ते नहीं आतेः-

हज़रत अबू तलहा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिस घर में कुत्ते और चित्र हों वहां फरिश्ते नहीं आते।

(बुखारी—मुस्लिम)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि जिब्रील अलै0 ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आने का वादा किया और वह न आये, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बड़ी तकलीफ हुई, बाहर तशरीफ ले गये तो हज़रत जिब्रील आप से मिले, आपने उनसे न आने की शिकायत की, हजरत जिब्रील ने कहा हम उस घर में नहीं जाते जहां कुत्ते और चित्र हों। (बुखारी)

हजरत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि जिब्रली ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वादा किया कि फुलां समय आऊँगा लेकिन वह घड़ी गुजर गई और वह न आये, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथ में एक लकड़ी थी आपने उसको फेंक दिया और फरमाया अल्लाह और उसका रसूल वादा खिलाफी नहीं करते, फिर आप की निगाह चारपाई के नीचे पड़ी तो आपको कुत्ते का पिल्ला नज़र आया, आपने फरमाया यह कुत्ता कब से यहां आया, मैंने अर्ज किया मुझे कुछ खबर नहीं, फिर वह आपके आदेश से निकाला गया तो हज़रत जिब्रील तशरीफ लाये, आपने उनसे फरमाया कि मैं तुम्हारा मुंतजिर रहा और तुम वादा पर न आये हज़रत जिब्रील ने कहा मुझे इस कुत्ते ने

रोके रखा था जो आप के घर में था, मैं उस घर में नहीं आता जिस घर में कुत्ते और चित्र हों।

(मुस्लिम)

ऊँची कब्र का हुक्मः–

हज़रत अबू हियाज हज्यान बिन हसीन से रिवायत है कि मुझ से अली बिन तालिब रज़ि0 ने कहा कि में तुम को उस काम पर न भेजूं जिस काम के लिए मुझ को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भेजा था वह यह कि कोई मूरत देखो तो उसको तोड़ डालो और कोई ऊँची कब्र देखो तो उसको समांतर कर डालो। (मुस्लिम)

देख रेख के लिए कुत्ता पालनाः–

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया खेत और जानवरों की देख भाल के लिए और शिकार के लिए कुत्ता पाल सकता है, इस के अलावा अगर किसी नीयत से पालेगा तो हर रोज़ उसकी दो क़ीरात नेकियां कम होती जायेंगी। (बुखारी–मुस्लिम)

एक रिवायत में है कि एक कीरातः–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि ने फरमाया जो कुत्ता खेत और जानवरों के अलावा किसी और उद्देश्य से पालेगा तो हर दिन एक कीरात नेकियां उसकी कम होती रहेंगी।

(बुखारी–मुस्लिम)

मुस्लिम शरीफ की रिवायत में है कि जो शख्स कुत्ता पालेगा न शिकार के उद्देश्य से न जानवरों की हिफाजत के लिए न जमीन के लिए तो उसके अज्र से हर दिन दो कीरात घटाये जायेंगे। ◆◇◆

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

कुर्आन की शिक्षा ....

"इन्नल्लाह ख़बीरूम्बिमातामलून" (अल्लाह तुम्हारे सब कामों से ख़ूब वाकिफ़ है) के बार बार ध्यान करने से पैदा होता है।

❖❖❖

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

ख़िलाफ़ते राशिदा

रहमते हक़ में नबी जब जा बसे
आँखों से ओझल हमारी हो गए
सिलसिला दौरे ख़िलाफत का चला
सिलसिला यह तीस बरसों तक रहा
तीस बरसों तक ख़िलाफ़त राशिदा
है यही क़ौले नबीये मुस्तफ़ा
बू बक्र, उमर, उस्मा, अलीये मुरतज़ा
और हसन इब्ने अली नूरुल्हुदा
पांचों हैं ख़ुल्फ़ाए राशिद बिल्यक़ीं
जन्नती होने में इनके शक नहीं
जो भी कहते हैं फ़क़त ख़ुलफ़ा हैं चार
छे महीनों की ख़िलाफ़त का नहीं करते शुमार
पर हसन की सुल्ह जो उसमें हुई
दुश्मनी बाहम जो थी वह मिट गई
ख़ुल्क़े हसन को देख कर हज़रत नबी ने था कहा
दो लड़े मुस्लिम गिरोहों को तो यह देगा मिला
हम हसन के ज़िक्र को ख़ुलफ़ा में लाएंगे सदा
गो ख़िलाफ़त का ज़माना उनका थोड़ा ही रहा
रहमतें या रब नबीये पाक पर
और उन की आल पर अस्हाब पर

बख़्शिश की दुआ

हैं बहुत इस्यां मेरे
हूं दबा उन के तले
या ख़ुदा नादिम हूं मैं
बख़्श मुझ को या करीम
तू है गफ़्फ़ारो रहीम
सुन ले मेरी यह दुआ
सुन ले मेरी इल्तिजा
ज़िन्दा रहूं इस्लाम पर
मौत हो ईमान पर

हज़ व ज़ियारत का मुबारक सफ़र

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

हज के यात्रियों के ले जाने वाले हवाई जहाज़ शव्वाल (ईद) के महीने के आखिर ही से उड़ानें भरने लगते हैं, और हमारे लखनऊ हवाई अड्डे की अधिकांश उड़ाने हज के यात्रियों को पहले मदीना मुनव्वरा पहुंचाती हैं।

एक समय था जब हज के यात्री केवल पानी के जाहाज़ से यात्रा करते थे, और आलिम लोग मसअला बताते थे कि अगर पहला हज है और मदीना तय्यिबा रास्ते में नहीं पड़ता है तो मदीना तय्यिबा हज के पश्चात जाना चाहिए, उस समय हाजियों की संख्या कम होती थी, हमारे भारत से तो बहुत कम लोग हज करने जाते थे। जिस समय हमारे पर दादा हाजी शमशेर अली ने हज किया था तो हमारे करीब के कई गावों में वह अकेले हाजी थे। और आज तो हाल यह है कि हमारे छोटे से गांव में एक दर्जन से अधिक हाजी हैं। ऐसा दो कारणों से हुआ, पहला कारण यह हुआ कि लोगों में दीन की जानकारी बढ़ी है, दूसरा कारण यह है कि अरब देशों की नौकरियों से मुसलमानों के पास पैसा आया, इसी प्रकार जो मुसलमान सरकारी नौकरी में हैं उनके यहां पैसों की बचत हुई इन दोनों कारणों से अब हाजियों की संख्या यहीं से नहीं हर देश से बढ़ी है। और अब पानी के जहाज़ों की कष्टदायक यात्रा बन्द कर दी गई और अब हज के यात्री केवल हवाई जहाजों से यात्रा करते हैं, अतः हाजियों की अधिकता के कारण मुन्तज़िमों ने अधिकांश हज यात्रियों को पहले मदीना मुनव्वरा पहुंचना आरम्भ किया।

हमारे देश के हज के यात्रियों को जब पहले तो इन्टरनेशनल पासपोर्ट बनवाना पड़ता है, फिर समय पर हज कमेटी में आवेदन करना पड़ता है चूंकि यहां शासन की ओर से हाजियों की संख्या सीमित होती है और आवेदन पत्र अधिक संख्या में होते हैं अतः परचा के द्वारा नाम निकालने की प्रक्रिया की जाती है। जिन भाग्यवानों का नाम निकल आता है हज यात्रा पे जाते हैं जिन के नाम नहीं निकलते वह अगले वर्ष की प्रतीक्षा करते हैं। बहुत से लोग प्राइवेट एजेंसियों द्वारा हज को जाते हैं प्राइवेट एजेंसियों का ख़र्च हज कमेटी से कहीं अधिक होता है।

बाज़ रिवायतों (नबी के कथनों) में आया है कि जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद में 40 फर्ज नमाज़ें पढ़ ले उस की बख्शिश हो जाएगी। प्रबन्धक हज का प्रबन्ध इस प्रकार करते हैं कि हाजी मदीना मुनव्वरा में इतना ठहरे की उसकी वहां चालीस फर्ज़ नमाजें पूरी हो जाएं, हज के यात्रियों को भी इस का ख़याल रखना चाहिए कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम की मस्जिद में चालीस फर्ज़ नमाज़ें जमाअत से अदा कर लें, ऐसा न हो कि बाजार में घूमने में कोई फर्ज़ नमाज़ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद में न पढ़ सकें, जियारत को जरूर जाएं मस्जिदे कुबा जाएं, जन्नतुल बकीअ़ जाएं और जगहों पर जाएं मगर यह जियारत फज्र की नमाज़ के पश्चात जुह्र के पहले पहले ही के समय में करें।

पहले नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्रे मुबारक (यानी रौज़े) पर हाजरी बड़ी आसान थी परन्तु अब हाजियों की अधिकता के कारण प्रबन्धकों को प्रतिबन्ध करना पड़ता है और ज़ियारत का समय देते हैं और रौज़े के सामने ठहरने नहीं देते ताकि दूसरों को भी हाजिरी का अवसर मिल सके, अतः हाजियों को इसमें सहयोग देना चाहिए और मवाजेह शरीफ (वह गोल छेद जो क़ब्रे मुबारक की सीध में दक्खिनी दीवार में बनाए गये हैं) के सामने पहुंच कर अदब से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सलाम करें फिर आपके दोनों साथियों हज़रत अबू बक्ऱ व हज़रत उमर रज़ि0 को सलाम करते हुए आगे बढ़ जाएं और जब भी मौक़ा मिले रौजे पर हाज़िरी में कोताही न करें, मर्दों को अलग और औरतों को अलग हाज़िरी और सलाम का अवसर दिया जाता है।

मदीना मुनव्वरा का समय पूरा हो जाने पर हाजियों को मक्का मुकर्रमा पहुंचाया जाता है, मदीना मुनव्वरा से मक्का मुकर्रमा की यात्रा बस द्वारा होती है, रास्ते में मदीने से थोड़ी दूर पर जुल हुलैफा (जिस को बिअ़रे अली भी कहते हैं) में नहाने धोने और एहराम बांधने का मौका दिया जाता है, मदीना से मक्का जाने वालों के लिए जुल हुलैफ़ा मीक़ात है और मीक़ात पर या उस से पहले एहराम बांध कर मक्का जाना जरूरी होता है। हमारे देश के हज यात्रियों का जहाज़ अगर पहले जद्दा पहुंचाये तो चाहिए कि अपने हवाई अड्डे ही पर एहराम बांध लें इसलिए कि हवाई जहाज़ जब मीक़ात पर पहुंचने वाला होता है तो एलान ज़रूर होता है परन्तु उस समय एहराम बांधना दुश्वार होता है। यह भी हो सकता है कि एहराम बांधते बांधते मीक़ात पार हो जाए अतः अपने हवाई अड्डे पर ही एहराम बांधना आवश्यक जानें।

एहराम बांधनाः-

पाक साफ हो कर मर्द एक चादर लुंगी की तरह बांध लें दूसरी ऊपर से ओढ़ लें, औरतें अपने मामूल के कपड़ों में रहें फिर बावुजू हो कर दो रकअत नमाज़ पढ़ कर इस तरह ''नीयत करें कि ऐ अल्लाह मैं उमरे की नीयत करता हूं मेरे लिए उमरा करना आसान कर दे फिर सर खोल कर तलबिया पढ़ें मर्द जहरी आवाज़ में पढ़ें औरतें आहिस्ता आवाज से पढ़ें, तल्बिया यह हैः—

''लब्बैक, अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक, ला शरीक लक लब्बैक, इन्नल हम्द वन्निअ़मत लक वलमुल्क ला शरीक लक''।

(जिन पूरे अक्षरों पर मात्रा या हलन्त नही है उनको प्रथक अक्षर की भांति ज़बर से पढ़ें, ज़बर के लिए ''अ'' की मात्रा लगाना हमारे निकट ग़लत है)।

एहराम में आ जाने के पश्चात मर्द सर खुला रखें गें और औरतें चेहरा खुला रखे गीं कोई अजनबी सामने आ जाए तो पंखा आदि से आड़ ले सकती हैं परन्तु चेहरे पर कपड़ा आदि नहीं रख सकती हैं। एहराम में आ जाने के पश्चात तमाम गुनाहों से बचे रहने का प्रयास करें, एवं एहराम की हालत में सुगन्ध लगाना मना है, बाल या नाखुन काटना मना, जुएं, चीलर आदि का मारना मना है। बीवी से मिलाप सख्त मना है, मर्द एहराम की हालत में सिले कपड़े नहीं पहन सकते, बनियान, अण्डर वियर और मोज़े भी नहीं पहन सकते, औरतें अपने कपड़ों में रहें।

मक्का मुकर्रमा पहुंच कर अपने ठहरने की जगह सामान वग़ैरा रख कर जल्द से जल्द काबे की मस्जिद में हाज़िर हों पाक साफ बावजू हों लब्बैक पढ़ते हुए जाएं, मस्जिदे हरम में दुआ पढ़ कर दाखिल हों काबे पर नज़र पड़ते ही लब्बैक कहना बन्द कर दें और खूब दुआएं करें, आपने लब्बैक का तरीक़ा सीख रखा होगा।

हजरे असवद के पास से तवाफ आरम्भ करें और जैसे सीखा हो सात चक्कर लगाएं इन चक्करों में बा वुजू रहना अनिवार्य है। इन चक्करों में अरबी में या अपनी भाषा में खूद दुआएं करें, सात चक्कर पूरे हो जाने पर जहां जगह मिले दो रकअत नमाज़ पढ़ें यह नमाज़ वाजिब है। चक्कर लगाते समय कोई फर्ज़ नमाज़ होने लगे तो जमाअत से नमाज़ पढ़ें और सलाम फेरते ही उठ कर अपने चक्कर पूरे करें, तवाफ पूरा करके खूब ज़म ज़म पियें और खूब दुआएं करें, अब सफा मरवा जाएंगे और सई करेंगे सई करने का तरीक़ा सीख लिया होगा, सफा से मरवा एक चक्कर कहलाता है फिर मरवा से सफा दूसरा चक्कर हुआ आपको सात चक्कर लगाने हैं इस प्रकार मरवा पर सातवां चक्कर पूरा होगा अब आप बाहर निकल कर नाई की दुकान पर सर मुंडा लें या कटवा लें औरतें अपने अपने हाथ से कैंची से एक अंगुल सब बाल अपनी चोटी से स्वयं काट लें, उमरा पूरा हो गया, अल्लाह कबूल करे। अब आप अपने आम कपड़ों में आजाएं एहराम की पाबन्दियां समाप्त हुईं अब अपनी क़ियाम गाह पर रहें, नमाज़ों की पाबन्दी करें, जितनी तौफ़ीक़ मिले हरम में नमाज़ें पढ़ें तावाफ़ करें, ज़मज़म पियें 8 जिल्हिज की प्रतीक्षा करें।

हज पर जाने वाले जो पढ़े लिखे हैं वह किताबों में हज का तरीक़ा पढ़ कर मन में बैठा लेते हैं और हज के सफर में हज के विषय पर लिखी कोई पुस्तक साथ में ले लेते हैं, जो पढ़े नहीं हैं वह किसी जानकार से हज का तरीक़ा सीख लेते हैं और सच यह है कि जो हज के लिए निकल पड़ता है अल्लाह तआ़ला उसके लिए आसानियां पैदा ही फरमा देते हैं।

आठ जिल्हिज को फिर पाक व साफ हो कर मर्द पहले की तरह एक चादर नीचे पहनते हैं और दूसरी ऊपर से ओढ़ते हैं और औरतें अपने कपड़ों में रहती हैं फिर बावजू हो कर दो रकअत नमाज़ पढ़ कर हज की नीयत इस तरह करते हैं, ऐ अल्लाह मैं हज की नीयत करता हूं मेरे लिए हज़ करना आसान फ र म ा। फिर मर्द सर खोल कर और औरतें चेहरा खोल कर पहले की तरह लब्बैक पढ़ते हैं। अब पहले की तरह एहराम की पाबन्दियां हैं:—

अब सब लोग मिना जाएंगे और वहां जुह्र, अस्र, मग़रिब, इशा और 9 की फज्र की नमाज़ें पढ़ेंगे, फिर दिन में अरफात जाएंगे 9 जिलहिज्ज को अरफात जाना फ़र्ज़ है, वहां जुह्र और अस्र की नमाज़ें पढ़ेंगे खूब लब्बैक पढ़ेंगे और दुआएं करेंगे, मग़रिब का वक्त हो जाने पर अरफात में मग़रिब पढ़े बिना मुजदल्फा को रवाना होंगे, मुजदलफा पहुंच कर मग़रिब व इशा एक साथ पढ़ेंगे वहीं रात गुज़ारेंगे और खूब दु आ एं करेंगे, फज्र पढ़ कर ज़रा रुकते हैं यह रुकना वाजिब है उसके बाद मिना रवाना होते हैं। रवानगी के पहले मुजदलफा में रमी के लिए कम से कम 50 कंकरियां छोटी छोटी चुन कर महफूज कर लेते हैं मिना पहुंच कर अपनी क़ियाम गाह पर सामान आदि रख कर सात कंकरियां ले कर लब्बैक पढ़ते हुए जमरात जाते हैं और वहां बड़े जमरा (बड़े शैतान) के पास पहुंच कर लब्बैक पढ़ना बन्द कर देते हैं और एक एक करके बड़े जमरा को सातों कंकरियां मारते हैं। कंकरियां मारने में वहां के नियमों का पालन अनिवार्य जाने, कमजोर लोग किसी दूसरे साथी द्वारा अपनी कंकरियां मरवा सकते हैं, वह अपनी कंकरियां मार कर दूसरे की ओर से कंकरियां मारता है।

कंकरियां मारने के बाद कुरबानी की जगह आ कर कुर्बानी करें, अगर किसी दूसरे से कुर्बानी कराई है या बैंक के द्वारा कुर्बानी कराई है तो जब मालूम हो जाय कि कुर्बानी हो चुकी है तो मर्द सर मुंडा लें या कतरवा लें औरतें अपने हाथ से कैंची आदि से अपनी चोटी से एक अंगुल सब बाल काट लें।

अब मामूल के कपड़े पहन सकते हैं, अब मर्द और औरत सब हरम जा कर तवाफ़ करें और सई करें यह तवाफ तवाफे ज़ियारत कहलाता है यह तवाफ़ फर्ज़ है यह तवाफ 12 जिलहिज्ज को सूरज गुरूब होने से पहले ज़रूरी है। अब मिना की कियामगाह आ जाएं, ग्यारह ज़िलहिज्ज को इक्कीस कंकरियां ले कर जमरात जाएं और तीनों जमरात को एक एक कर के सात सात कंकरियां मारें, पहले छोटे जमरा को फिर बीच वाले को फिर बड़े वाले को कंकरिया मारें इसको रमी करना कहा जाता है ग्यारह की रमी जुह्र के बाद की जाती है फिर 12 जिल्हिज्ज को भी जुह्र बाद तीनों जमरात की रमी करते हैं अब बारह को मग़रिब के पहले पहले मक्के वाली कियाम गाह पर आ जाएं, हज पूरा हुआ अल्लाह कबूल करे।

अब घर वापसी की तारीख की प्रतीक्षा करें और अल्लाह जितनी तौफ़क़ दे हरम में नमाजें अदा करें। घर वापसी से पहले रुखसती का तवाफ यानी तवाफे वदाअ़ करें कि यह वाजिब है, ज़म ज़म और खजूरों के साथ अपने वतन वापस हों और मिलने वालों के लिए दुआएं करें उनको खजूरें और ज़म ज़म पेश करें। हज करने वाले इसी तरह हज पूरा करते हैं।

हज्जे क़िरान करने वाले उमरा पूरा कर के न सर मुंडाते हैं न एहराम के बाहर आते हैं। उसी एहराम से हज अदा करते हैं वह एहराम की नीयत करते वक़्त हज व उमरा दोनों की नीयत करते हैं। इफराद हज करने वाले मीकात पर सिर्फ़ हज की नीयत करते हैं वह उमरा नहीं करते मक्का पहुंच कर तवाफ़े कूदूम करके उसी एहराम में रहते हैं और उसी एहराम से हज अदा करते हैं।

क़िराम हज और तमत्तोअ़ हज करने वालों पर कुर्बानी वाजिब होती है लेकिन इफ़राद हज करने वालों पर कुर्बानी वाजिब नहीं होती उन का दिल चाहे तो कुर्बानी भी कर लें सवाब ले लें।

औरतों को अगर मीक़ात पर एहराम से पहले हैज़ आ जाता है तो वह वुज़ू करके नमाज़ पढ़े बग़ैर उमरे की नीयत करती हैं और अगर मीकात के बाब हैज़ आ जाता है तो दोनों हालतों में वह एहराम में हैं मगर मक्का पहुंच कर पाकी का इन्तिज़ार करती हैं पाक हो जाने पर उमरा करती हैं, इसी तरह आठ जिल्हिज्ज को एहराम से पहले हैज़ आ जाए तो वुज़ू करके हज की नीयत करेंगी। एहराम के बाद हैज़ आजाए तो दोनों सूरतों में मिना जाएंगी अराफ़ारत जाएंगी, मुजदल्फा जाएंगी, रमी करेंगी मगर तवाफे ज़ियारत पाक होने के बाद ही करेंगी।

नमाज़ः-

हमारे उलमा कहते हैं कि अगर आठ जिल्हिज्ज से पहले पहले मक्के में 15 दिन क़ियाम हो चुका है तो हाजी मिना अरफ़ात और मुजदल्फा में नमाज़ कस्र न करेंगे और उन पर हज वाली कुर्बानी के अलावा माल वाली कुर्बानी भी है चाहे वहां करें या अपने वतन में करवाएं, मगर हज वाली कुर्बानी वहीं होगी।

लेकिन अगर आठ जिल्हिज्ज तक वहां रहते 15 दिन नहीं हुए हैं तो मिना अरफ़ात और मुजदल्फा में नमाज़ों में कस्र करेंगे और उन पर हज वाली कुर्बानी तो है मगर माल वाली कुर्बानी वाजिब नहीं है।

सऊदी उलमा मिना अरफ़ात और मुजदल्फ़ा में हर हाल में नमाज़ कस्र करने का फ़तवा देते हैं लिहाज़ा अपने अपने मसलक पर अमल करें और बह्स व मुबाहसा से दूर रहें।

❖❖❖

अनुरोध

अगर आपको "सच्चा राही" की सेवाएं पसन्द हों तो आप से अनुरोध है कि "सच्चा राही" के नये ग्राहक बनाने का प्रयास करें, अल्लाह आपको अज्र देगा और हम आपके आभारी होंगे।

(संपादक)

इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद

–हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) – अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

तौहीद (एकेश्वरवाद) का अक़ीदा मुसलमानों की अन्तर्राष्ट्रीय पहचानः–

तौहीद मुसलमानों की संस्कृति की अन्तर्राष्ट्री पहचान और अलामत है जो अक़ायद (विश्वासों) से ले कर आमाल (कर्मों) तक और इबादत से ले कर तक़रीबात (कार्यक्रमों) तक हर जगह दिखेगा। उनकी मस्जिदों के मीनार पाँच बार एलान करते हैं कि अल्लाह के अलावा कोई इबादत और बन्दगी का पात्र नहीं। उनके मकान व ड्राइंगरूम को भी इस्लामी उसूल के अनुसार बुतपरस्ती और शिर्क की पहचानों से सुरक्षित होना चाहिए। तस्वीर, स्टैच्यू, मूर्तियां उनके लिए अवैध हैं। यहां तक कि बच्चों के खिलौनों में भी इसका लेहाज़ ज़रूरी है। धार्मिक समारोह हों या देश के महोत्सव राजनीतिक नेताओं का जन्म दिन हो या धार्मिक पेशवाओं का जन्म दिन या ध्वजारोहण समारोह, तस्वीरों और प्रति मूर्तियों के सामने झुकना और उनके सामने हाथ जोड़ कर खड़े होना उनको हार फूल पहनाना मुसलमान के लिए मना और उसकी एकेश्वरवादी तहज़ीब के खिलाफ़ है। जहां कहीं मुसलमान अपनी इस्लामी तहजीब पर अमल करेंगे वह इन कृत्यों से अलग होंगे। नामों, में आयोजनों में, कसम में बुजुर्गों के आदर एहतराम व नियाज मन्दी में, हिजाज़ी तौहीद की सीमाओं से आगे निकलना और किसी क़ौम का अनुसरण करना, इस्लाम से फिर जाने के प्रयाय हैं।

तौहीद, ताक़त का स्रोतः–

जिसका दिल तौहीद से अवगत होगा वह अल्लाह तआला ही की ज़ात पर भरोसा करेगा। मुसीबत में उसी को पुकारेगा और खुशहाली में उसी का शुक्र अदा करेगा और हाजत व आजिजी (विवशता), बन्दगी का तअल्लुक़ अल्लाह के अलावा और किसी से न रखेगा। इसमें अगर कमी होती है तो अल्लाह की नुसरत (मदद) में कमी होती है। कुर्आन मजीद में साफ़–साफ़ इशारे हैं कि जिस उम्मत की तौहीद में फर्क़ आया उसकी ताक़त में अन्तर आ गया। ताक़त का सबसे बड़ा स्रोत तौहीद का अक़ीदा है।

अल्लाह तआला कहता है–

अनुवादः– *"हम बहुत जल्द काफिरों (इन्कारियों) के दिलों में रोअ़ब बिठा देंगे, इसलिए कि उन्होंने अल्लाह का शरीक ऐसी चीज़ को ठहराया जिसके लिए उसने कोई दलील (प्रमाण) नहीं उतारी और उनका ठिकाना जहन्नम (नर्क) है, और वह कैसी बुरी जगह है जालिमों (अत्याचारियों) के लिए।*

(सूरः आले इमरान–151)

अनुवादः– *"बेशक जिन्होंने बछड़े को उपास्य बनाया उन्हें उनके पालनहार की ओर से गुस्सा और सांसारिक जीवन में ज़िल्लत पहुंचेगी और हम मिथ्यारोप करने वालों को यही दण्ड देते हैं।*

शिर्क कमजोरी का कारण है, हमेशा रहा है और हमेशा रहेगा, अल्लाह ने चीज़ों में ख़ासियतें (गुण) पैदा की हैं। ज़हर में एक खासियत है, तिरयाक़ (विषहर) में एक ख़ासियत है, पानी में एक खासियत है, आग में एक ख़ासियत है, इसी तरह शिर्क में कमज़ोरी की एक खासियत है। और तौहीद में ताक़त और निर्भयता और रोब में न आने की ख़ासियत है। इसीलिए सबसे बड़ी ज़रूरत इसकी है कि अक़ायद को सही किया जाये, खुदा के साथ इब्राहीमी मुहम्मदी, कुर्आनी तालीम के अनुसार तौहीद का रिश्ता मज़बूत हो। इस रिश्ते को फिर मज़बूती की ज़रूरत है। इसलिए कि शैतान हमेशा ताक में रहता है। वह हमेशा छापा मारता रहता है और चोर वहीं जाता है जहां दौलत होती है। जिसके पास तौहीद और ईमान की दौलत है उसके लिए खतरा है, उनके लिए खतरा भी नहीं जिनके पास यह नेमत है ही नहीं। इन्सान पर अक़ीद–ए–तौहीद का जो अक़्ली असर पड़ता है उसकी बदौलत वह सारे आलम को एक केन्द्र और एक व्यवस्था के अधीन समझने लगता है, और उसके बिखरे हुए अंशों में एक खुला हुआ सम्पर्क और वहदत आने लगती है। और इस तहर इन्सान जिन्दगी की पूरी व्याख्या कर सकता है और उसके चिन्तन व कर्म की इमारत हिकमत व सूझ–बूझ, अच्छाई व खौफ़े खुदा (तक़्वा) पर सहयोग, इन्सानियतकी भलाई, समाज के संगठन, सभ्यता के मार्गदर्शन, दीन व दुन्या के जोड़ और सहयोगी व संघर्षरत तब्कों की एकता व भाईचारा की बुनियादों पर कायम हो सकती है।

शुद्ध तौहीद का अक़ीदाः–

इस कुदरत के कारखाने का एक बनाने वाला है जो हमेशा से है और हमेशा रहेगा। वह तमाम खूबियों, तारीफ़ों की बातों और कमालात (सम्पूर्णताओं) की हामिल, सर्वगुण सम्पन्न और हर तरह के ऐब (अवगुण) तथा कमज़ोरियों से पाक है। वह सर्वव्याप्त है और सर्वज्ञान सम्पन्न है। यह पूरी सृष्टि उसी के इरादे से है, सुनने वाला है, देखने वाला है, न कोई उसकी तरह है न उसका कोई मुकाबला और बराबरी वाला है, वह बेमिसाल है, वह किसी मदद का मोहताज नहीं, सृष्टि के चलाने और उसकी व्यवस्था करने में उसका कोई शरीक, साथी और मददगार नहीं, इबादत का सिर्फ वही पात्र है। वही है जो मरीज़ को शिफ़ा देता है मख़लूक को रोज़ी देता, और उनकी तकलीफ़ों को दूर करता है। खुदा के अलावा दूसरों को माबूद (पूज्य) बनाना, उनके सामने गिड़गिड़ाना, उनको सज्दा करना, उनसे दुआ और ऐसी चीज़ों में मदद मांगना जो इन्सानी ताक़त से बाहर और सिर्फ खुदा की कुदरत से

शेष पृष्ठ....31 पर..

आदर्श शासक

—मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी —अनुवादः अतहर हुसैन

दूसरे ख़लीफा हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0 का शासन काल

हज़रत सअ़द बिन वक़्क़ास रज़ि0 एक महान और उच्च सहाबी हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नातेदारी भी थी और उन दस सहाबियों में से एक थे जिन्हें जीवन ही में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्वर्ग में जाने का शुभ समाचार सुना दिया था, जब ईरानी युद्ध आरम्भ हुआ, ईरान के सम्राट ने अपनी पूरी शक्ति से सामना करने का निश्चय किया और अपने प्रसिद्ध सेनापति रुस्तम के सहस्रों सैनिकों के साथ इस दृढ़ संकल्प से भेजा कि समस्त मुसलमानों को क़ादसिया की खाई में गाड़ दिया जाये। उस समय सारे अरब में हलचल मच गई। सब की राय हुई कि हज़रत उमर रज़ि0 स्वयं इस्लामी सेना का नुतृत्व करें और हज़रत उमर रज़ि0 इसके लिए तैयार भी हो गये, परन्तु बड़े—बड़े सहाबी इस विचार से सहमत न हुए। उन्होंने कहा कि आपका जाना किसी प्राकर उचित नहीं। आपके स्थान पर किसी दूसरे को भेज दिया जाये। आप विदेश तथा गृह सम्बन्धित मामलों पर दृष्टि रखें। अन्ततः सहाबियों की सम्पत्ति तथा सोच—विचार के बाद हज़रत सअ़द इब्न अबी वक़्क़ास रज़ि0 इस महत्वपूर्ण सेवा के लिए नियुक्त कये गये।

इस कथन से यह बात विदित होती है कि हज़रत सअ़द रज़ि0 का हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तथा हज़रत उमर रज़ि0 और अन्य सहाबियों की दृष्टि में क्या स्थान था और कितना मान था परन्तु इस मान मर्यादा के उपरान्त, जब उनके विषय में यह सूचना मिली कि उन्होंने कूफ़े में जहां के आप गवर्नर बनाये गए थे, एक मकान बनवा कर उसमें एक बड़ा फाटक लगवाया है और द्वारपाल नियुक्त किया है तो हज़रत उमर रज़ि0 ने तुरन्त ही हज़रत मुहम्मद बिल मुसलैमः रज़ि0 को एक पत्र देकर भेजा और कहा, कि मुझे जो सूचना मिली है यदि वह सत्य निकले तो तुम निःसंकोच फाटक में आग लगा देना। अगर सअ़द रज़ि0 कुछ रोक—टोक करें तो मेरा यह पत्र दे देना। इस आदेश के अनुसार हज़रत मुहम्मद बिन मुसलैमः रज़ि0 कूफ़े की ओर चले। पहुंचे तो देखा वास्तव में एक शानदार महल बना हुआ है और उसमें एक मज़बूत फाटक लगा है। यह देख कर उन्होंने अमीरुल —मामिनीन के आदेशानुसार फाटक में आग लगा दी। जब अग्नि की ज्वाला भड़की और

हज़रत सअ़द रज़ि0 ने निकल कर आग लगने का कारण पूछा, तो हज़रत मुहम्मद बिन मुसलैमः रज़ि0 ने अमीरुल मोमिनीन का पत्र प्रस्तुत किया जिसमें लिखा था कि मुझे इस प्रकार की सूचना मिली है– ''तुमने एक महल बनवा कर भारी फाटक लगवाया है। इसका परिणाम यह होगा कि द्वार पर दरबान बैठेगा और पीड़ितों को तथा न्याय याचकों को बेरोक–टोक सुगमतापूर्वक तुम्हारे पास पहुंचना सम्भव न होगा अतः मुहम्मद बिन मुसलैमः को यह आदेश दिया गया कि वह फाटक को फूंक दें ताकि सर्वसाधारण को तुम से मिलने से कोई वस्तु रोक न बन सके।

इन्हीं हज़रत सअ़द इब्न वक़्क़ास की एक और घटना उल्लेखनीय है। ईरानी संग्रामों में नहावन्द का मोर्चा अति महत्वपूर्ण है। क़ादसिया के उपरान्त इतना ज़बरदस्त कोई दूसरा मुक़ाबला पेश नहीं आया। ईरान के सम्राट यज़्दगुर्द ने अपने समस्त बल को एकत्रित कर अन्तिम तथा निर्णायक युद्ध की ठान ली थी। ईरानी घमण्ड की भावना अपनी अन्तिम सीमा पर थी। राजा तथा परजा की पूर्ण शक्ति एक केन्द्र पर जमा हो गई थी। इस्लामी इतिहास से परिचित जन भली–भांति जानते हैं कि यह पल मुसलमानों के लिए बड़ा नाजुक था। हज़रत सअ़द रज़ि0 इस ईरानी मोर्चे के सर्वोच्य सेनाध्यक्ष थे। अपने विस्तृत अनुभव तथा क़ादसिया और मदायन के महान विजेता होने के कारण, इस मोर्चे पर उनका होना आवश्यक था, परन्तु ठीक उसी समय ख़लीफ़ा के दरबार में उनकी शिकायत पहुंची। ऐसे नाजुक समय पूर्णतया राजनीतिक दृष्टि से देखने वाले के लिए किसी शिकायत की जांच–पडताल करने का यह समय न था, बल्कि सब ओर से नज़र हटा कर केवल उस सख़्त मोर्चे की ओर ध्यान देने की आवश्यकता थी। परन्तु जिन महान आत्माओं की दृष्टि लौकिक साधनों के बजाय आंतरिक विशुद्धता पर थी। जो विजय तथा पराजय को मानवीय प्रयास का परिणाम ही नहीं समझते थे बल्कि इसे ईश्वरीय आज्ञापालन समझते थे। उनका निर्णय बिल्कुल साफ़ था। हज़रत उमर रज़ि0 ने शिकायत सुन कर कहा, यद्यपि स्थिति बहुत नाजुक है परन्तु परिस्थितियां कैसी भी जटिल हों मैं इस्लामी सिद्धान्तों तथा ईश्वरीय आदेशो की उपेक्षा नहीं कर सकता। हज़रत सअ़द रज़ि0 को आदेश भेजा कि तुरन्त मदीना पहुंचो। आदेश मिलते ही हज़रत सअ़द रज़ि0 मदीना पधारे। उनके सामने शिकायतें रखी गयीं, और उत्तर मांगा गया। जब उन्होंने हर प्रकार से संतोषप्रद उत्तर दे दिया और उनके उत्तरों से हज़रत उमर रज़ि0 को उनके निरापराध होने का विश्वास

हो गया तो उन्हें वापस किया ताकि वह मोर्चे पर पहुंच कर अपने सैन्य सम्बन्धी कार्य को संभाल लें। अल्लाह तआ़ाला ने इस फर्ज़शिनासी के फलस्वरूप मुसलमानों को नहावन्द के मोर्चे पर विजय प्रदान की और ईरानी शक्ति इस प्रकार चूर–चूर कर दी कि फिर उन्हें कभी सामना करने का साहस न हुआ।

कुटुम्बियों का पद विच्छेदः–

प्रायः ऐसा होता आया है कि, शासन के प्रभाव से सत्ताधिकारी के सगे सम्बंधी तथा कुटुम्बी असाधारण लाभ उठाते हैं और सर्वसाधारण के मुक़ाबले में सुख तथा आनन्द का जीवन व्यतीत करते हैं। लेकिन हज़रत उमर रज़ि0 ने शासन का जो स्तर नियत किया था उसमें इसकी कल्पना ही न थी। वह जिस प्रकार मोटा–झोटा और फटा–पुराना पहन कर जीवन व्यतीत करते थे उसी प्रकार अपने परिवार को रखना चाहते थे और किसी अवस्था में भी यह उचित न समझते थे कि उनके सगे सम्बन्धियों को जनसाधारण के मुक़ाबले में किसी भी प्रकार की श्रेष्ठता प्राप्त हो। इस विषय में दृढ़ता तथा सावधानी की यह दशा थी कि अपने क़बीले के लोगों को कभी कोई पद नहीं दिया। प्रान्तों की गवर्नरी, फौजों की सरदारी तथा दफ़्तरों की अफसरी अर्थात् हर प्रकार के पदों से अपने सम्बन्धियों को वंचित रखा। इसे भी उचित न समझा कि उनके बाद उनके ख़ानदान का कोई व्यक्ति उनका उत्तराधिकारी नियुक्त हो सके। लोगों ने देहान्त के समय बहुत इच्छा प्रकट की कि अपने पुत्र हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ि0 को भविष्य में ख़िलाफ़त के लिए नामांकित कर दें, परन्तु आपने दुःख प्रकट करते हुए इस परामर्श को निरस्त कर दिया और वसीयत कर दी कि अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ि0 कभी खलीफ़ा न चुनें जायें। हज़रत उमर रज़ि0 ने अपने सम्बन्धियों के दिमाग़ से हुकूमत करने का ध्यान इस तरह निकाल दिया था कि इस्लामी इतिहास के पृष्ठों में कभी कोई फ़ारूक़ी ख़िलाफ़त की प्राप्ति के लिए प्रयास करता दिखाई नहीं देता है। हज़रत उस्मान रज़ि0 की शहादत के बाद ख़िलाफ़त के लिए कैसे– कैसे मुआ़रके हुए, उमवी शासनकाल तथा अब्बासी युग के आरम्भ में अनेकों ख़िलाफ़त के हक़दार मैदान में आये परन्तु इस लम्बी सूची में हज़रत उमर रज़ि0 के किसी पुत्र पौत्र का नाम आपको दिखायी न देगा। यह आप ही की शिक्षा का परिणाम था कि खानदान वालों के हृदय से शासन करने की इच्छा सदैव के लिए निकल गयी थी।

❖❖❖

–पिछले अंक से आगे

नमाज़ की हक़ीक़त व अहम्मीयत

–मौलाना मुहम्मद मंजूर नोमानी रह0

–हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

अफज़ल व अस्लह इमाम के मुयस्सर होते हुए गैर अफज़ल को इमाम बनाना जुर्म है जिसकी सजा इस दुन्या में भी मिलती हैः–

अल्लाह तआला हमारी हालतों पर रहम फरमाए, हम इतना भी नहीं समझते कि इस तर्जे अमल का साफ साफ मतलब यह है कि अपनी नमाज़ों को बेहतर बनाने और अच्छी तरह अदा करने की हमें कोई परवाह नहीं है, फिर अगर अल्लाह की रहमत व नुसरत भी हमारी तरफ से बे परवाह हो जाए तो बिल्कुल हक़ और ऐन अद्ल है। इमाम अहमद अपने रिसाला ''अस्सलातु वमा यलज़िमुहा'' में नाक़िल हैंः–

''हदीस में आया है कि जब किसी कौम की इमामत एक शख्स करे और उसके पीछे नमाज़ पढ़ने वालों में कोई इससे अफज़ल और अस्लह मौजूद हो तो वह कौम हमेशा तनज़्ज़ुल और पस्ती में रहेगी''।

अजीब बात है, बहुत से नमाज़ें पढ़ने वाले यह सोचते हैं कि जब हम नमाजें पढ़ते हैं तो दुन्या में भी हम को वह इनआ़मात क्यों नहीं मिलते जिन की बशारतें कुर्आन व हदीस में नमाज़ें काइम करने वालों को सुनाई गई हैं और क्यों हम इज़्ज़त की ज़िन्दगी से महरूम, पस्ती के गढ़े में पड़े हुए हैं? मगर यह नहीं सोचते कि जिस पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़रिये इक़ामते सलात की शर्त के साथ यह बशारतें हम को मिली हैं उसी पैगम्बर की ज़बान से हम को यह भी सुनवा दिया गया था कि नमाज़ का हक़ अदा करने में हत्ता कि इमाम के इन्तिखाब में भी कोताहियां करने वालां के लिए ज़िल्लत व पस्ती और खराबी व बरबादी ही है, पस आज जिस जिल्लत व नकबत से हम दो चार हैं और जो ख्वारी व बे एतिबारी हम पर मुसल्लत है इसके सिवा की हम को तवक्कु करने का क्या हक है।

अफ्सोस! मुसलमानों ने इमामत के लिए अफज़ल व अस्लह के इन्तिखाब की अहम्मीयत को नहीं समझा, हक़ीक़त यह है कि अच्छे इमाम, अच्छे सरदार और अच्छे लीडर का इन्तिखाब ही किसी कौम की फलाह व बहबूद और इज़्ज़त व तरक़्की का बुन्यादी पत्थर होता है, जिस कौम को हर दिन में पांच मरतबा अच्छे काइद का इन्तिखाब करना पड़ता हो और एक क़ानून के मातहत उस की इक़्तिदा की मश्क़ मुकर्ररा वज़ीफे की तरह की जाती हो, उस की ज़ेहनी सलाहियतों और अमली ताक़तों के नश्व नमा का कोई क्या अन्दाजा कर सकता है।

दुशमनों पर गल्बा और मन्सबे खिलाफत हासिल होने में नमाज़ की तासीर का राज़ः–

कुर्आने मजीद में जो कहीं कहीं इस तरह के इशारात किए गए हैं कि नमाज़ मसलन जमाअती मुशकिलात व मसाइब को दूर करती है

और जोफ़ व मग़लूबीयत को ताक़त व इक़्तिदार से बदलती है और नमाज़ काइम करने वाली उम्मत बिलआखिर मन्सबे खिलाफत पर फाइज की जाती है, सो इन नताइज में जिस तरह नमाज़ की बातनी और रूहानी तासीर का दख्ल है उसी तरह अस्बाबे ज़ाहिर के नुक़्–तए–नज़र से उस ज़हनी व अमली तरबीयत को भी दख्ल है जो बाजमाअत नमाज़ के जरिये मुसलसल तौर पर उम्मत को दी जाती है।

इस नुकते पर तफ्सीली गुफ़्तगू का तो यह मौका नहीं, ताहम मुखतसरन इतना इशारा कर देना मुनासिब मालूम होता है कि अल्लाह तआला की तरफ से मन्सबे खिलाफत पर फाइज़ किए जाने और तम्कीन फिल अर्ज अता होने के लिए किसी जमाअत में जो बातनी औसाफ और आला अखलाक़ होने चाहिए मसलन अदालत, समाहत, बे लाग खुदा तरस्ताना सीरत वगैरा, पस नमाज़ अगर खुशूअ व खुजूअ और शऊर व हुजूर के साथ पढ़ी जाए जैसा कि उस का हक़ है तो एक तो वह यह औसाफ व अखलाक़ पैदा करके उस मन्सबे अज़ीम का मुस्तहिक़ और अहल बनाएगी और दूसरी तरफ वही इस जिद्दू जुहद के लिए भी उम्मत को तरबीयत देगी जो उस मुक़ाम व मन्सब को हासिल करने के लिए इस आलमे अस्बाब में जरूरी है। पस नमाज़ दर हक़ीक़त इन दोनों हैशियतों से मक़ामे खिलाफत और तम्कीन फिल अर्ज की कलीद भी है, कुर्आन मजीद की मुन्दरजा जेल आयत में नमाज़ के इन नताइज व असरात की तरफ लतीफ इशारात किए गए हैं।

तर्जमाः–*''तुम्हारे मुखालिफीन तुम्हारे और तुम्हारी दावत के बारे में जो कुछ कहते हैं इस पर सब्र करो और सूरज निकलने और उसके डूबने से पहले अल्लाह की तस्बीह और हम्द किया करो और रात में भी और सज्दों के बाद उसकी पाकी बयान किया करो''। (क़ाफ़ः 40)*

''अपने रब के हुक्म पर जमे रहो, तुम हमारी नज़रों में हो और अपने रब की हम्द व तस्बीह करो, जब तुम उसके सामने खड़े हो और रात के वक़्त और सितारे डूबने के वक़्त भी उसकी तस्बीह करो''। (तूरः 49)

''और सब्र और नमाज़ के जरिये अल्लाह तआला से मदद लो''। (अल बकराः 153)

और सूरे युनूस में हज़रत मूसा अलै0 और उनकी क़ौम के साथ फिरऔनी हुकूमत की सख्तियों का तज़किरा फरमाने के बाद बनी इसराईल की यह दुआ नक़्ल की गई है।

तर्जमाः–*''ऐ हमारे परवरदिगार! हम को ज़ालिम कौम का तख़्–तए–मश्क़ न बना और अपनी रहमत से हमें इस काफिर कौम के मज़ालिम से नजात दे''। (यूनुसः 86)*

फिर बनी इसराईल की यह दुआ नक़्ल करने के बाद मुत्तसिलन इरशाद हुआ हैः

तर्जमाः–*''और हम ने मूसा और उनके भाई हारून को वही की कि अपनी क़ौम के लिए मिस्र में घर मुकर्रर करो, और अपने इन घरों को किब्ला रुख करो और नमाज़ काइम करो और ईमान वालों को नजात और फत्ह की खुशखबरी सुना दो''। (यूनुसः 87)*

और बिल्कुल इसी तरह सूरे कौसर में बराहे रास्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम को और आप के तवस्सुत से सारी उम्मत को नमाज़ और कुरबानी का हुक्म देने के साथ दुशमनों के मगलूब व मकहूर और तबाह व बरबाद होने की खुशखबरी सुनाई गई है।

तर्जमाः– *''पस अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ और कुरबानी कर, बिलयक़ीन तेरा बदख्वाह दुशमन बिल्कुल बरबाद हो जाने वाला है''।(अल कौसर)*

अलगरज इन आयात में कुर्आन मजीद के अदा शनासों के लिए बहुत साफ इशारात हैं कि नमाज़ में मसाइब व मुशकिलात से नजात दिलाने और दुशमनों का जोर तोड़ने की भी खास तासीर है और खिलाफत व तम्कीन फिल अर्ज के मकामे मौऊद तक पहुंचने के लिए नमाज़ एक खास वसीला है। अगरजे यह हक़ीक़त किसी वक़्त भी न भूलनी चाहिए कि नमाज़ का अस्ल मक़सद अल्लाह तआला की याद और उसके सामने इजहारे उबूदीयत ही है और उस का हक़ीक़ी अज्र आखिरत ही में मिलने वाला है।

हमारी मौजूदा जिल्लत व मग़लूबीयत इक़ामते सलात से गफलत की सज़ा हैः–

नमाज़ की तासीरात और उसके इन्फिरादी व इजतिमाई नताइज व समरात के बारेमें यहां और इससे पहले भी जो कुछ अर्ज किया गया है हमें इस का एतिराफ है कि वाक़िआत की इस दुन्या में आज हम इसमें से कुछ भी नहीं देख रहे हैं और इस वजह से मुम्किन है कि बहुत से लोग इन बातों को सिर्फ ''खुश अक़ीदगी की बातें'' समझें लेकिन वाक़िआ यह है कि जिन नमाज़ों की यह तासीरात थीं दर अस्ल वह नमाज़ें ही हम से छूट गई हैं, हम में से जो लोग नमाज़ के पाबन्द नहीं हैं उनका तो जिक्र ही नहीं जो दो चार फीसदी नमाज़ें पढ़ते भी हैं, आमतौर से वह भी गफलत व लापरवाई ही से पढ़ते हैं और इसलिए उनकी भी नमाज़ें बेरूह और रस्मी ही रह गई हैं ''सिवाए उनके जिनको अल्लाह तौफ़ीक़ दे और वह बहुत कम हैं'' और नमाज़ जैसी इबादत की खासीयत है कि अगर उनको कमा हक्कुहु एहतिमाम और खशीयत व अदब के साथ अदा किया जाए तो यह अफराद की सीरतों को पाकीज़ा बनाती है और उनको बावकार करती हैं, और जब कोई उम्मत इजतिमाई हैसीयत से इन पर कारबन्द हो तो वह अल्लाह तआला की तरफ से खासुल खास रहमतों और सरफराज़ियों से नवाज़ी जाती है, यहां तक कि खिलाफत और तम्कीन फिल अर्ज़ के मक़ामे आली तक उसकी रसाई होती है, लेकिन इस के बर अक्स अगर इन की अदायगी में गफलत और बे परवाई बरती जाए तो फिर यही गज़ब और खुसरान का मोजिब हो जाती हैं।

कुर्आन मजीद की मजकू –रए–बाला आयत में जिस तरह नमाज़ को अल्लाह की खास रहमतों का बाइस और गल्बा व उरूज का वसीला बतलाया गया है उसी तरह दूसरी आयात में गफलत व बेपरवाई से नमाज़ें पढ़ने को मोजिबे तबाही भी बतलाया गया है।

शेष पृष्ठ....41 पर..

आपके प्रश्नों के उत्तर?

—मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः एहराम के कपड़े कैसे होने चाहिए, क्या एहराम के लिए सफेद कपड़े ही ज़रूरी हैं, अगर किसी शख्स ने रंगीन कपड़ों में एहराम बांध लिया तो उसके बारे में क्या हुक्म है?

उत्तरः मर्द के एहराम के लिए जिन कपड़ों का इस्तेमाल किया जाए, उससे इजार यानी लुंगी कम अज कम नाफ से ले कर घुटनों तक होनी चाहिए, ताकि सत्र अच्छी तरह ढक जाए, और रिदा यानी चादर ऐसी लम्बी होनी चाहिए जो (इज़तिबा के वक़्त) दाहिने कन्धे के नीचे से निकाल कर बाएं कन्धे पर सुहूलत से आ जाए, और एहराम में मर्दों के लिए सफेद कपड़ों का इस्तेमाल अफज़ल है, अगर किसी ने सफेद के अलावा कोई और दूसरा रंग मसलन काला, लाल, पीला या हरा वगैरा इस्तेमाल किया तो भी दुरुस्त है, या रंगीन ऊनी चादर ओढ़ ली तो भी कोई हरज नहीं।

(रद्दुल मुहतारः 3/488)

प्रश्नः एहराम बांधने से पहले गुस्ल करना, कंघी करना, तेल लगाना, और कपड़ों पर खुशबू लगाने वगैरा का क्या हुक्म है?

उत्तरः एहराम से पहले गुस्ल कराना, और गुस्ल के बाद बदन पर इत्र लगाना मसनून है, इसी तरह कंघी करना और गुस्ल करने के बाद सर और दाढ़ी में तेल लगाना मुस्तहब है, लेकिन कपड़ों में ऐसी गाढ़ी खुशबू लगाना जिस का असर बाद तक रहे, दुरुस्त नहीं है, अलबत्ता मामूली हल्की किस्म की खुशबू लगाने की गुंजाइश है, लेकिन बहतर नहीं है।

(दुर्रे मुखतार मए रद्दुल मुहतारः 3/488)

प्रश्नः एहराम की लुंगी दरमियान से सिल कर पहनना कैसा है, क्योंकि बसा औक़ात सिली न होने की वजह से उसका बांधना दुशवार होता है, और सत्र खुलने का भी अन्देशा रहता है, अगर नीचे के कपड़े को दरमियान में सिल दिया जाए तो क्या इस तरह से एहराम में कोई नक्स तो नहीं होगा, और क्या इस में कोई जनायत तो लाज़िम नहीं होगी?

उत्तरः अफज़ल यही है कि एहराम की लुंगी बिल्कुल सिली हुई न हो, लेकिन अगर सत्र खुलने के अन्देशे से उसे बीच से सिल कर पहना जाए तो इसकी भी गुंजाइश है, इसकी वजह से कोई जनायत लाज़िम नहीं आती।

(रद्दुल मुहतारः 3/499)

प्रश्नः हालते एहराम में मिस्वाक करना कैसा है?

उत्तरः मिस्वाक हर हाल में मसनून और मुस्तहब है, हालते एहराम में भी और गैर एहराम में भी।

(रद्दुल मुहतारः 1/233—234)

प्रश्नः हालते एहराम में औरतों के लिए ज़ेब व ज़ीनत खास तौर से जेवरात

और चूड़िया वगैरा पहनना कैसा है?

उत्तरः हालते एहराम में औरतों के लिए ज़ेब व ज़ीनत खास तौर से ज़ेवरात और चूड़ियां पहनने की इाजज़त है, मुसन्नफ इब्ने अबी शैबा में हज़रत उबैदुल्लाह की रिवायत है कि अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 की औरतें और बेटियां हालते एहराम में जेवरात इस्तेमाल करती थीं, फुकहा ने जेवारात के जवाज़ को नक़्ल किया है।

(बदाए सनाएः 2/410)

प्रश्नः एक मुहरिम का दूसरे मुहरिम को सिला कपड़ा पहनाना या खुशबू लगा देना कैसा है?

उत्तरः अगर एक महरिम ने दूसरे मुहरिम को सिला हुआ कपड़ा पहनाया, खुशबू लगाई, या उसके सर या चेहरे को ढांक दिया तो ढांकने वाले मुहरिम पर कोई जुरमाना वाजिब नहीं, अलबत्ता जिस मुहरिम को सिला कपड़ा पहनाया और खुशबू लगाया है, उस पर जुरमाना वाजिब है।

(मनासिक मुल्ला अली क़ारीः 334)

प्रश्नः एहराम की हालत में दाढ़ी या मोंछ के बाल काटना कैसा है?

उत्तरः अगर किसी मुहरिम ने हलाल होने के वक़्त से पहले सर या दाढ़ी के चौथाई हिस्से के बाल मुंडवाए या कतरवाए तो उस पर दम वाजिब होगा, और अगर मोंछों को मुंडवाए या कतरवाए तो उस पर सदक़ा वाजिब होगा।

(गुनीयतुन्नासिकः 255)

प्रश्नः मक्का मुअ़ज़्ज़मा में क़ियाम के दौरान कसरत से तवाफ करना अफज़ल है या उमरा करना या नफ़्ल नमाजें पढ़ना, इन तमाम में सबसे बेहतर और अफज़ल अमल कौन सा है?

उत्तरः मक्का मुअ़ज़्ज़मा में क़ियाम के दौरान कौन सा अमल अफजल है, इस बारे में कुछ तफ्सील है और वह यह है कि अगर कोई शख्स इतने वक़्त तक तवाफ में मुसलसल मशगूल रहता हो जिस में उमरा किया जा सकता है तो तवाफ अफज़ल है और अगर इतनी मुद्दत तक तवाफ में मशगूल नहीं रहता बल्कि तवाफ में कम वक़्त लगाता है तो ऐसी सूरत में उमरा करना अफज़ल है।

(गुनीयतुन्नासिकः 138)

प्रश्नः अगर कोई शख्स तवाफ की हालत में अपना चेहरा बैतुल्लाह शरीफ की जानिब कर ले तो क्या इस का तवाफ बातिल हो जाएगा, या उसका दोहराना वाजिब होगा, क्या न दोहराने की वजह से दम वाजिब होगा?

उत्तरः आदाबे तवाफ में से यह है कि अपनी नज़र चलने की जगह पर रखे, इधर उधर न दौड़ाए, अगर कोई शख्स दौराने तवाफ बैतुल्लाह शरीफ को देखे जब कि उस का सीना और पैर बैतुल्लाह की तरफ न हो तो उस का यह अमल खिलाफे अदब है और मकरूहे तनजीही है, तवाफ का दोहराना वाजिब नहीं है और न दम है, और अगर चेहरा व सीना दौराने तवाफ बैतुल्लाह शरीफ की

तरफ कर ले भीड़ भी न हो तो इस सूरत में तवाफ का दोहराना लाज़िम है, और न दोहराने की सूरत में दम वाजिब होगा, हां अगर मुताफ में इस क़दर भीड़ हो कि बिला इरादा चेहरा या सीना बैतुल्लाह की तरफ हो जाए तो यह उज़्र है, इसकी वजह से न तवाफ का दोहराना है, न कराहत है, और न ही दम वाजिब है।

(फत्हुल क़दीरः 3/58)

प्रश्नः दौराने तवाफ अगर वुजू टूट जाए तो तवाफ करने वाला क्या करे?

उत्तरः अगर दौराने तवाफ चार चक्करों से पहले वुजू टूट जाए तो तवाफ उसी जगह रोक कर वुजू के बाद वहीं से बकीया तवाफ मुकम्मल कर सकता है, लेकिन अफजल यह है कि अज सरे नो (फिर से) तवाफ करे, और अगर चार चक्करों के बाद वुजू टूटा तो इख्तियार है चाहे तो वुजू करके बकीया चक्कर पूरे कर ले या अज सरे नौ तवाफ करे।

(गुनीयतुन्नासिकः 197)

प्रश्नः एहराम की हालत में नाखुन काटने का क्या हुक्म है?

उत्तरः अगर एक मजलिस में दोनो हाथों के पूरे नाखुन काटे तो एक ''दम'' है और अगर दूसरी मजलिस में दोनों पैरों के नाखुन काटे तो दूसरा दम है और अगर एक ही मजलिस में दोनों हाथों और दोनों पैरों के सब नाखुन काटे तो एक ही दम देना होगा और अगर एक हाथ या एक पैर से कम नाखुन काटे तो हर नाखुन के बदले सद्–कए– फित्र के बराबर सद्का दे। एक हाथ एक पैर के नाखुन काटने का वही हुक्म है जो दोनों हाथों और दोनों पैरों के नाखुन काटने का बयान हुआ यानी अगर एक ही मजलिस में एक हाथ के सब नाखुन और एक पैर के सब नाखुन काटे तो एक ही दम वाजिब होगा, लेकिन अगर एक मजलिस में एक हाथ के सब नाखुन काटे और दूसरी मजलिस में एक पांव के सब नाखुन काटे तो दो दम वाजिब होंगे।

(फतावा हिन्दियाः 1/244)

प्रश्नः आफाक़ी, हिल्ली और ह़रमी कौन लोग कहलाते हैं?

उत्तरः मक्के के चारों तरफ काफी फासले पर कुछ मकामात मुकर्रर हैं उनको मीक़ात कहते हैं व यह हैं यलम लम, जुलहुलैफा, ज़ाते इर्क़ और हुजफा और कर्न इन की सीध से बाहर रहने वाले जब मक्का आते हैं तो वह आफ़ाक़ी कहलाते हैं, मक्का मुकर्रमा के चारों तरफ क़रीब ही हरम की हदें हैं हरम की हदों के अन्दर रहने वाले हरमी कहलाते हैं और हरम के हुदूद और मीक़ात के हुदूद के बीच का इलाक़ा हिल्ल कहलाता है और हिल्ल के रहने वाले हिल्ली कहलाते हैं।

प्रश्नः अगर कोई हज या उमरा करने वाला एहराम बांधे बगैर मीक़ात की हुदूद पार कर के मक्के की तरफ चला जाए तो उसके लिए क्या हुक्म है?

उत्तरः एहराम के बगैर हज या उमरा करने वाला मीक़ात

की हदें पार करके मक्के की तरफ चला जाए तो उस पर एक दम वाजिब होगा लेकिन अगर लौट कर मीक़ात पर आ कर एहराम बांध ले तो दम न देना होगा।

प्रश्नः क्या मर्द सिले कपड़े उतार कर एक चादर नीचे बांध ले और एक ऊपर से ओढ़ ले तो क्या वह मुहरिम (एहराम में) कहलाएगा?

उत्तरः हज या उमरे की नीयत करके जब तक लब्बैक न पढ़ लेगा एहराम में न आएगा अलबत्ता मर्द के लिए सिले कपड़े उतार कर एहराम की चादरें पहनना भी वाजिब है हां औरतें अपने मामूल के कपड़ों ही में हज या उमरे की नीयत कर के और लब्बैक पढ़ के एहराम में आजाएंगी।

प्रश्नः इस्तिलाम किसे कहते हैं?

उत्तरः हजरे अस्वद का इस्तिलाम उसको चूमना है या हाथ लगा कर हाथ को चूमना है या छड़ी लगा कर छड़ी को चूमना है या दूर हों तो उसकी तरफ हाथ उठाना है और रुक्ने यमानी का इस्तिलाम उस को सिर्फ हाथ से छू लेना है।

प्रश्नः तवाफ करने का मस्नून तरीक़ा बताइये?

उत्तरः काबे का घर चार दीवारों से घिरा हुआ है ऊपर छत है पूरब तरफ की दीवार में दरवाज़ा है यह दरवाज़ा कुछ ऊँचाई पर है दरवाज़े के पल्ले सोने के हैं इनमें दो कुन्टल से जियादा सोना है इस दीवार को छोड़ कर तीनों दीवारें काले रेशम के पर्दे से ढकी हैं उत्तर जानिब कुछ हिस्सा हतीम का हिस्सा है जो काबे के हुक्म में है दख्खिन पूरब के कोने पर कुछ ऊँचाई पर गड्ढेदार काला पत्थर जड़ा हुआ है इस को हजरे अस्वद कहते हैं हजरे अस्वद से पहले वाले कोने को रुक्ने यमानी कहते हैं।

तवाफ करने वाले को बावुजू होना चाहिए बेवुजू तवाफ नहीं हो सकता तवाफ करने वाला आफाक़ी मर्द ऊपर की चादर का दाहिना हिस्सा दाहिने कन्धे के नीचे से निकाल कर बाएं कन्धे पर डाल ले इसको इज़तिबाअ़ कहते हैं अब तवाफ करने वाला हजर वाले कोने से पहले काबे की तरफ मुंह करके खड़ा हो और नीयत करे कि ऐ अल्लाह मैं तवाफ की नीयत करता हूं मेरे लिए तवाफ करना आसान कर दे फिर काबे की तरफ मुंह किए हुए हजर का इस्तिलाम करे फिर काबे के दरवाज़े की तरफ चले इस तरह की काबा बाएं हाथ की तरफ रहे अब काबे का चक्कर लगाए यह चक्कर हतीम के बाहर से रहेगा हतीम के अन्दर से निकल कर चक्कर लगाना सही न होगा, चक्कर लगाते हुए रुक्ने यमानी पर पहुंचे तो उस का इस्तिलाम करे फिर जब हजरे अस्वद पर पहुंचेगा तो एक चक्कर होगा फिर हजर का इस्तिलाम करके दूसरा चक्कर लगाए इस तरह सात चक्कर पूरे करे।

पहले तीन चक्करों में आफाक़ी मर्द के लिए रमल करना यानी जरा अकड़ अकड़ कर चलना सुन्नत है और सातों चक्करों में इजतिबा सुन्नत है, औरतों के लिए न रमल है न इजतिबा।

तवाफ में खूब दुआएं करें दुआएं अरबी में हों या अपनी जबान में अल्बत्ता रुक्ने यमानी और हजर के बीच में यह दुआ पढ़ें:—

"रब्बना आतिना फिद्दुन्या हसनतंव—व फिल आखिरति हसनतंव—व किना अ़ज़ाबन्नार"।

तवाफ करते वक़्त निगाह सामने रहे काबे की तरफ रुख करना मना है, भीड़ के सबब तवाफ़ शुरुअ़ करते वक़्त हजर के पास पहुंचना आसान नहीं है इसलिए हजर की सीध में हरी बत्ती जला दी गई है, हरी बत्ती की सीध में पहुंच कर तवाफ की नीयत करे और हज़रे अस्वद की तरफ हाथ उठा कर बिस्मिल्लाह अल्लाहु अकबर कहे यह हजर का इस्तिलाम हो गया अब सात चक्कर पूरे करे भीड़ में रुक्ने यमानी का इस्तिलाम नहीं है, सात चक्कर पूरे हो जाने पर जहां जगह मिले दो रक्अत नमाज़ पढ़े यह नमाज़ वाजिब है, भीड़ में मक़ामे इब्राहीम के पास नमाज़ पढ़ने की कोशिश न करें। तवाफ पूरा हो गया अब ज़मज़म पी कर खूब दुआएं करे।

यह उमरे और हज के तवाफ का बयान हुआ, नफ़्ल तवाफ जितने कर सकें करें उनमें न रमल है न इस्तिबाह। तवाफ करते वक़्त काबे के गिर्द मुलतज़म, मीज़ाब वगैरा की खास दुआएं अरबी में लिखी हैं चाहे तो उनको पढ़े चाहे अपनी ज़बान में दुआएं मांगें।

प्रश्नः सई करने का तरीक़ा बताइये?

उत्तरः काबे से पूरब (यह पूरब पूरा पूरब नहीं है बल्कि पूरब उत्तर का रुख है) थोड़ी दूर पर सफा व मरवा की दो पहाहिड़यां हैं इनके बीच लगभग 600 मीटर का फासिला है सफा से मरवा की तरफ चलने में थोड़ी दूर पर दो हरे पत्थर हैं जिनको मीलैन अखजरैन कहते हैं इन के ऊपर हरी बत्तियां जला दी गई हैं सफा व मरवा के बीच का हिस्सा मसअ़ा कहलाता है अब मसअ़ा को दो मंजिला और एअरकंडीशन कर दिया गया है दूसरी मंजिल पर सफा व मरवा की सीध में मसनूई पहाड़ियाँ बना दी गई हैं दूसरी मंजिल पर भी सई सहीह है, सई करने वाला दूर या नज़दीक से हजर का इस्तिलाम करके सफा दरवाज़े से सफा पहाड़ी पर जाए और वहां चौथा कल्मा पढ़ के सई की नीयत से मरवा की तरफ चलें यहां कई दुआएं पढ़ी जाती हैं मगर कम से कम चौथा कल्मा पढ़ें, चौथा कल्मा यह है:—

"ला इलाह इल्लल्लाहु वह दहु ला शरीक लहू लहुल मुल्कु व लहुल हमदु युह़यी व युमीतु, बियदहिल खैरु वहुव अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर"

अब मरवा की तरफ चलें, मीलैन अखज़रैन के बीच में मर्द हल्के से दौड़ कर चलें औरतें मामूल की चाल चलें मरवा पहुचने पर मरवा पर चढ़ जाएं यह एक शौत हुआ अब मरवा से सफा की तरफ चलें, मीलैन अखज़रैन के बीच मर्द फिर उसी तरह हल्की दौड़ से चलें, सफा पहुंचे और सफा पहुंच कर पहाड़ी पर चढ़ जाएं, यह दो शौत हुए इसी तरह सात शौत पूरे करें जो मरवा पर पूरे होंगे, सई पूरी हो गई सई में भी खूब दुआएं करना चाहिए।

माजूरों के लिए जो चल कर सई नहीं कर सकते, पहिए दार कुर्सियां मिलती हैं उनके चलाने वाले भी उजरत पर मिलते हैं जो तवाफ भी करवा देते हैं और सई भी।

प्रश्नः तवाफे कुदूम किन लोगों के लिए ज़रूरी है?

उत्तरः तवाफे कुदूम (यानी हरम में दाखिल होने का तवाफ) उन आफाक़ी हज करने वालों पर वाजिब है जो हज्जे इफराद या हज्जे क़िरान करें, इफराद हज करने वाले मस्जिदे हराम में दाखिल होते ही कुदूम का तवाफ करेंगे लेकिन क़िरान हज करने वाले पहले उमरे का तवाफ करेंगे फिर कुदूम का तवाफ करेंगे, तमत्तु हज करने वालों पर तवाफे कुदूम वाजिब नहीं है।

प्रश्नः औरत अगर एहराम की हालत में अजनबियों से अपना चेहरा किसी चीज़ से आड़ न करे तो क्या गुनहगार होगी?

उत्तरः औरत को चाहिए कि एहराम की हालत में अजनबियों से पंखे वगैरा से अपना चेहरा इस तरह आड़ करे कि पंखा वगैरा चेहरे से न लगे यह उस के लिए बेहतर है लेकिन अगर इस तरह आड़ न कर सके तो गुनहगार न होगी अलबत्ता मर्दों के लिए जरूरी है कि वह अपनी निगाहें नीची रखें जो मर्द न महरम औरत के चेहरे पर शरई जरूरत के बगैर निगाह डालेगा तो गुनहगार होगा।

प्रश्नः जमरात और उन को कंकरियां मारने के बारे में बताइये।

उत्तरः अरबी लफ़्ज़ जमरा के माना हैं कंकरी लेकिन जिस सुतून को कंकरियां मारी जाती हैं उसी को जमरा कह दिया गया और चूंकि यह तीन हैं इसलिए जमरा की जमा उनको जमरात या जिमार कहा जाता है उसका किस्सा इस तरह हैः ''हज़रत इब्राहीम अलै0 ने जब ख्वाब में देखा कि अपने बेटे इस्माईल को जब्ह कर रहे हैं, चूंकि अल्लाह के नबियों का ख्वाब सच्चा होता है इसलिए वह मसझे कि मुझे बेटे को जब्ह करने का हुक्म है चुनांचि बेटे को जब्ह करने के लए उसे साथ लेकर मिना जा रहे थे रास्ते में शैतान मिला और उसने उन को इस अमल से रोकने की कोशिश की तो इब्राहीम अलै0 ने उस को कंकरियां मारीं तो वह जमीन में धंस गया आप आगे बढ़ गए लेकिन शैतान फिर आ

गया फिर वही कोशिश की तो आप ने फिर उसको कंकरियां मारीं और वह जमीन में धंस गया आप आगे बढ़ गए लेकिन वह मरदूद फिर आ गया और आप को अल्लाह के हुक्म की तामील से रोकना चाहा हज़रत इब्राहीम अलै0 ने फिर उसको कंकरियां मारीं वह जमीन में धंस गया, आप आगे बढ़ गए और मिना पहुंच कर बेटे को जब्ह के लिए लिटा दिया बेटा भी ब खुशी राजी था बाप ने आंखों पर पट्टी बांध कर बेटे के गले पर छुरी चला दी, ख्वाब में इतना ही देखा था, आवाज़ आई, ऐ इब्राहीम तुम ने अपना ख्वाब सच कर दिखाया फिर अल्लाह ने जिब्रील अलै0 के जरिए जन्नत से एक दुंबा भेज कर इस्माईल की जगह लिटवा दिया, दुंबा जब्ह हुआ और अल्लाह ने इस्माईल अलै0 को बचा लिया''।

जिन जगहों पर हज़रत इब्राहीम अलै0 ने कंकरयां मारी थीं उन तीनों जगहों पर खंबे बना दिए गए थे और हाजी लोग हज के दौरान कंकरियां मारते रहे, अब यह खंबे दीवार नुमा बना दिए गए हैं और बहुत जियादा भीड की वजह से इन को तीन मंजिला कर दिया गया है और हाजी लोग तीनों मंजिलों से कंकरियां मारते हैं इन में जो खंबा मक्के से करीब है उसको जम–रए–अ़क्बा कहते हैं हिन्द पाक वाले उसको बड़ा शैतान कहते हैं, बीच वाले को जम–रए–वुस्ता कहते हैं लोग उसे मंझला शैतान कहते हैं, उसके बाद वाले को जम–रए–ऊला कहते हैं लोग उसको छोटा शैतान कहते हैं।

कंकरियां मारने के अवकात:

10 जिल्हिज्ज की सुब्ह को मुजदलफा से मिना आने के बाद सात कंकरियां ले कर जमरात जाते हैं। कंकरियां पत्थर की हों न बहुत छोटी हों और न बहुत बड़ी बल्कि दरमियानी हजम की हों लब्बैक पढ़ते हुए जमरात जाएं और जम–रए–अ़क्बा के पास पहुंच कर लब्बैक कहना बन्द कर दें और जम–रए–अक़्बा को एक एक करके सातों कंकरियां मारें, हर कंकरी मारते वक्त अल्लाहु अक्बर कहें अंगूठा और बगल की उंगली से पकड़ कर मारना चाहिए, कंकरी सुतून के गिर्द बने घेरे में गिरना चाहिए सुतून को लगना जरूरी नहीं है, 10 तारीख की सुब्ह से गुरूब से पहले तक यह कंकरियां मारी जाती हैं रात में भी सुब्ह सादिक़ से पहले तक मारी जा सकती हैं लेकिन कोई उज्र न हो तो रात में कंकरियां मारना मकरूह है यह दस तारीख की रमी हुई।

11 जिल्हिज्ज को जवाल के बाद 21 कंकरियां ले कर जमरात जाएं और पहले जम–रए–ऊला को कल की तरह एक एक कर के सात कंकरियां मारें फिर जम–रए–वुस्ता को उसी तरह

एक एक करके सात कंकरियां मारें फिर जम–रए–अ़क्बा को उसी तरह सात कंकरियां मारें, जम–रए–ऊला और जम–रए–वुस्ता को कंकरियां मारने के बाद कुछ रुक कर दुआ करना भी साबित है लेकिन भीड़ की वजह से वहां रुकने नहीं दिया जाता लिहाजा चलते चलते दुआ कर लेना चाहिए, ग्यारह की रमी जवाल के बाद से मगरिब से पहले तक है अगर रह जाए तो रात में सुब्हे सादिक़ से पहले तक कर सकते हैं, इसी तरह बारा की रमी तीनों जमरात को जवाल के बाद से मग़रिब से पहले तक की जाती है अगर बारह के बाद वाली रात मिना में गुजारी तो तेरह को भी रमी करना वाजिब होगा मगर तेरह को सुब्ह के वक़्त रमी कर सकते हैं। 10,11,12 की रमी हर हाजी पर वाजिब है जो शख्स माज़ूर हो वह अपनी रमी दूसरे से करवा सकता है, दूसरा शख्स अपनी कंकरियां मारने के बाद उस की कंकरियां मारेगा।

आज कल भीड़ के सबब सऊदिया के आलिमों ने 11,12 की रमी जवाल से पहले कर लेने की इजाज़त दे दी है, हमारे यहां के मौलाना खालिद सैफुल्लाह रहमानी ने अपनी किताब ''कामूसुल फिक्ह'' में रमी के तहत हज़रत इमाम अबू हनीफा रह0 का एक कौल नक़्ल किया है कि कोई उज़्र हो तो 11,12 की रमी जवाल से पहले की जा सकती है।

❖❖❖

इस्लाम के तीन बुन्यादी.....

तअल्लुक रखती है। (जैसे औलाद देना, किस्मत अच्छी बुरी करना, हर जगह मदद के लिए पहुंच जाना, हर दूरी की बात सुन लेना, दिल की बातें और छुपी हुई चीज़ों को जान लेना) इस्लाम की शब्दावली में शिर्क है, और वह सबसे बड़ा गुनाह है जो बगैर तौबा के माफ नहीं होता।

कुर्आन में कहा गया है–

अनुवादः– *''उसकी शान यह है कि जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है तो उससे कह देता है कि ''हो जा'' तो वह हो जाती है।''*

अल्लाह न किसी के शरीर में उतरता है, न रूप धारण करता है, न उसका कोई अवतार होता है, वह किसी जगह या दिशा में सीमित नहीं है, जो चाहता है वही होता है, जो नहीं चाहता नहीं होता, वह ग़नी (धनी) व बेनियाज़ (जिसको किसी वस्तु की आवश्यकता न हो) है, वह किसी का मोहताज नहीं, उस पर किसी का हुक्म नहीं चलता, उससे पूछा नहीं जा सकता कि वह क्या कर रहा है, हिक्मत उसी की सिफ़त है, उसका हर काम जतनपूर्ण है और अच्छाई लिए हुए है, उसके अलावा कोई वास्तविक हाकिम नहीं। भाग्य अच्छा हो या बुरा अल्लाह की तरफ से है, वह पेश आने वाली चीज़ों को पेश आने से पहले जानता और उनको वजूद (अस्तित्व) प्रदान करता है।

..... जारी.....

❖❖❖

–देवनागरी लिपि में उर्दू

हिज्जतुल वदाअ़ में इंसानियत के नाम पैग़ाम

–मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

–हिन्दी लिपिः राशिदा नूरी

शरीअते इस्लामी की पाबन्दीः–

अरबों के मरकज़ी शहर मक्का मुसलमानों की ज़ेरसरकरदगी में आ जाने और पड़ोस के क़बाइल हवाज़िन और सक़ीफ की कोशिश के भी नाकाम हो ने और सारे अरब की तरफ से इस्लाम को ग़ालिब मान लेने के बाद मुसलमानों को किसी लड़ाई का खतरा बाक़ी न रहा और यह रुकावटें खत्म हो जाने पर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने मानने वालों की बड़ी तादाद को मक्का में जो सारे अरब का दीनी मरकज़ की हैसियत माना जाता था हज़ के मौक़े पर इकट्ठा करना मुनासिब समझा कि फरजिए–हज भी अदा करें और एक जगह जमा होने पर उनसे ख़िताबे आ़म भी हो जाए।

चुनांचि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस हज़ के मौक़े पर एक लाख चौदह हज़ार की तादाद में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मानने वाले जमा हुए और हज अदा किया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह हज़ दावते इस्लामी की तकमील और निज़ामे इस्लामी के बाक़ाइदा कयाम का ऐलाने आम था। और यह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पहला और आख़िरी हज़ था इसी में उम्मते मुस्लिमा के लिए उमूमी हिदायात दी गयीं, और दीन की तकमील जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से क़ब्ल नहीं हुई थी, अब उसका भी एलान कर दिया गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़ का जो ख़ुतबा दिया उसमें आइन्दा के लिए हिदायात और ज़ाबितए अख़्लाक़ का वाजेह़ ऐलान और इंसानी खूबियों की ह़ामिल ज़िन्दगी का जामेअ़ और मुफस्सल तसव्वुर के उसूल ज़ाहिर फरमा दिये, इसी मौक़े पर कुर्आन शरीफ की वह आयत जिसमें दीन की तक्मील की इत्तिला दी गयी, नाज़िल हुई–

तर्जुमाः *"आज हमने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन (जिसको साबिक़ अंबिया के जरीये इंसानों तक पहुंचाने का सिलसिला चला आ रहा था) मुकम्मल कर दिया, और अपनी यह नेअ़मत तुम पर पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को ही बहैसियत दीन के पसन्द किया।" (सूरह माइदाः 3)*

इस कुर्आनी ऐलान में यह अहम बुन्यादी बातें बताई गयीं एक तो यह कि इंसानी ज़िन्दगी का इस कुरहे अर्ज़ पर आग़ाज़ होने के वक़्त से इंसानों की इस्लाह और किरदारसाज़ी की जो हिदायात नबियों के ज़रीये से बराबर आती रहीं, अब वह मुकम्मल हो गयीं और दीन के अहकाम इस सतह तक पहुंचा दिये गये जिसमें किसी बदलाव और कमी व

बेशी व इज़ाफा वग़ैरह की ज़रूरत पेश न आयेगी, इसके लिए यह बात फरमाई कि ''मैंने दीन तुम्हारा मुकम्मल कर दिया'' दीन की वह खूबियां जो इंसानी ज़िन्दगी के लिए ज़रूरी और मौज़ूं और जितनी होना चाहिए वह पूरी कर दी गयीं, दूसरी बात यह फरमाई कि मैंने दीन व अख्लाक़ की अपनी नेअ़मत तुम सब पर पूरी कर दी, यानी इंसानियत और फर्द इंसानी की सलाह व फलाह का जो दर्जए कमाल व नमूनए अअ़ला है वह तुम्हारे लिए मुहैय्या कर दिया गया, और तुमको मक़ामे बलन्द तक पहुंचा दिया गया, फिर उसी से तअ़ल्लुक़ रखने वाली बात के तौर पर यह वाज़ेह़ कर दिया गया कि मक़ामे बलन्द के लिए जिस तरीक़ेकार व सिफाते हसना दीन की ज़रूरत है वह तरीक़े–कार व सिफाते हसना दीन इस्लाम की सूरत में अ़ता की गयी हैं और रब्बुल आ़लमीन की रज़ामन्दी का इन्हिसार अब उसी पर है। अल्लाह तआला उसी के मुताबिक़ इंसानी अमल को मंजूर करेगा, जिसको फरमाया गया ''कि दीने इस्लाम ही मेरे लिए पसंदीदा और क़ाबिले क़ुबूल है'', इस तरीक़े से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत को और दीन के पैग़ाम को इस ज़मीन पर इंसानी आबादी के क़ाइम रहने तक के लिए तय कर दिया गया, और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस मौक़े से इंसान के आला इंसानी अक़दार और अ़द्ल व मसावात और इंसानी जान की सलामती और इंसाफ की अहम ज़रूरी हिदायात इनायत फरमाई, और हाज़िरीन को मुख़ातब करते हुए फरमाया कि जो यहां मौजूद हैं वह उनको याद रहे, दिलो दिमाग़ में महफूज़ करलें और जो मौजूद नहीं हैं मौजूद लोग उनको यह हिदायात पहुंचाएं, क्योंकि बाज़ वक़्त बराहेरास्त सुनने वाले ज़ियादा बिलवास्ता सुन्नने वाला बात को ज़ियादह अहमीयत के साथ इख्तियार करता है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आख़िरी हज़ः–

हिजरत के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सिर्फ यही एक हज़ किया, और यही आपका अव्वल और आख़िरी हज़ यानी अपनी रिसालत के काम की तक्मील पर और उम्मत से आप की रुख़्सती की मुलाक़ात थी, इससे क़ब्ल हज़ की फ़र्ज़ीयत भी नहीं हुई थी, यह फ़र्ज़ीयत आपकी वफ़ात से एक साल क़ब्ल यानी सन् 9 या 10 हिजरी में हुई, यह हज़ हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिदायात और दीनी इर्शादात के लिहाज़ से बहुत अहमीयत रखता है।

इस्लाम को ग़ालिब करने की कोशिशों की कामयाबी और इस्लामी पैग़ाम की तक्मील के ऐलान और उम्मते इस्लामिया को ताक़ियामत हिदायात देने का यह बेहतरीन मौक़ा था, जिसमें मुसलमानों का

ग़ैरमामूली इजतिमाअ़ था, चुनांचि जब यह मौक़ा आया जो अल्लाह तआ़ला के आखिरी रसूल और उम्मते इस्लामिया के अबदी रहबर हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हयाते तय्यबा का आखिरी साल था, उसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने मानने वालों को ताक़ियामत अमल करने की वाजेह ताकीद की और उसी के साथ तब्लीग़े ह़क़ की ज़िम्मेदारी भी सिपुर्द की, आपके इस हज़ में इबादते हज़ की अदायगी के लिए सहीह नमूना भी दिखाया गया।

हिदायात और वसीयतें:-

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने जो हिदायात इस हज़ के दौरान अपने खुत्बों में दीं, उनमें एक बड़ी हिदायत और वसीयत यह कि इंसानी ब्रादरी में मुसाबात रहे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इंसानी ब्रादरी में एक को दूसरे के मुसाबी करार देने का ऐलान फरमाया और यह फरमाया किसी एक की ब्रतरी दूसरे के मुक़ाबले में उसी क़द्र होगी जितना कि वह परवरदिगार यानी अल्लाह तआला के हुक्मों का ज़ियादह पास व लिहाज़ रखने वाला हो, उसके अहकामात में अहतियात से ज़िन्दगी बसर करने वाला हो, इर्शाद फरमायाः

तर्जुमा– *"ऐ लोगो! तुम जानते हो कि यह कौन सा महीना और कौन सा दिन है? और तुम किस शहर में हो?"* लोगों ने जवाब दिया यह दिन बड़ा बाहुर्मत और यह महीना बड़ा काबिले एहतराम है, और यह शहर बड़े एहतिराम वाला है, तो सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम में`स किसी एक की जान और माल और इज़्ज़त हुर्मत व एहतिराम वाली हैं जिस तरह आज का यह दिन, यह महीना और यह शहर, फिर फरमाया, सुनो मुझ से वह बातें सुनों जिनसे तुम सहीह ज़िन्दगी गुज़ार सकोगे, खबरदार जुल्म न करना, खबरदार जुल्म न करना, खबरदार जुल्म न करना, किसी शख्स के माल में से कुछ लेना जाइज़ नहीं, हां अगर वह राज़ी हो, तो कोई हर्ज नहीं, हर एक की जान, हर एक का माल, जो जाहिलीयत के अहद में जाइज़ समझा जा रहा था, अब क़ियामत तक उसको जाइज़ समझा जाना ख़त्म किया जा रहा है, सबसे पहला खून जो खत्म किया जाता है, वह रबीअ़ा बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब का खून था, उसने बनी लयेस में परवरिश पाई थी, और हुज़ैल ने उसको क़त्ल कर दिया था।

जाहिलीयत के तमाम सूद भी बातिल कर दिये गये यह अल्लाह तआ़ला का फैसला है, और सबसे पहला सूद जो खत्म किया जाता है, वह अ़ब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब का सूद है, हां सूदी मुआमलात में तुम्हारा जो रासुलमाल हो वह महफूज़ है, सिलसिले में न तुम किसी पर जुल्म करो, न तुम्हारे ऊपर जुल्म किया जाए, और देखो! मेरे बाद मेरे हुक्मों के खिलाफ न हो जाना कि एक दूसरे की गर्दन मारने लगो, और देखो! अब शैतान भी

मायूस हो चुका है कि नमाज़ पढ़ने वाले उसकी परस्तिश करने लगें, लेकिन वह मुम्हारे दर्मियान रख़्ना–अन्दाज़ी करता रहेगा, और देखो! औरतों के मुआ़मलात में खुदा से डरो, क्योंकि वह तुम्हारे ज़ेरे असर हैं, वह अपने मुआ़मले में इख़्तियार नहीं रखतीं, लिहाज़ा उनका तुम पर हक़ है, और तुमहारा उन पर यह हक़ है कि वह तुम्हारे अलावा तुम्हारे बिस्तर पर किसी को आने न दें और न ऐसे शख्स को तुम्हारे घर आने दें जिसे तुम नापसन्द करते हो, और अगर तुम उनकी नाफरमानी से खतरा महसूस करो तो उन्हें नसीहत करो, और उनकी ख्वाबगाहों को अलग कर दो, और हल्के तरीक़े से मारो, और देखो! उन्हें खाने कपड़े का हक़ पूरी तरह हासिल है, तुमने उन्हें खुदा की अमानत के तौर पर अपनी रिफाक़त में लिया है, उनसे जिन्सी तअ़ल्लुक़ को अल्लाह के नाम से अपने लिए जाइज़ किया है, और देखो! किसी के पास किसी की अमानत हो तो वह साहिबे–अमानत को वापस करे और देखा! मैं अपने बाद तुम्हारे लिए एक ऐसी चीज़ छोड़े जाता हूं कि अगर तुमने उस को मज़बूत पकड़े रखा तो तुम गुमराह न होगे वह चीज़ क्या है? वह किताबुल्लाह, यानी कुर्आनी दस्तूरूलअमल, और देखो! तुमसे खुदा के यहां मेरी निस्बत पूछा जायेगा, बताओ तुम क्या जवाब दोगे? सहाबा ने अ़र्ज़ किया हम कहेंगे कि आपने खुदा का पैग़ाम पहुंचा दिया, अपना फर्ज़ अदा कर दिया, इस जवाब पर आपने शहादत की उंगली आसमान की तरफ उठाई और तीन मर्तबा फरमायाः ''ऐ खुदा तू गवाह रहना,'' इतना फरमाने के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने दोनों हाथ फैलाये और फरमाया कि क्या मैंने पैग़ाम पहुंचा दिया? फिर मायाजा जो हाज़िर हैं वह ग़ैर हाजिर तक यह बात पहुंचा दें क्योंकि बहुत से ग़ैर हाज़िर सुनने वालों से ज़ियादह खुशबख़्त होते हैं।

यह वह ऐलान था जो इंसानी तारीख में सबसे पहले आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ से किया गया, और जो इस्लाम के उसूलों में से एक अहम उसूल क़रार पाया, चुनांचि उसी की बिना पर आपस के इजतिमाअ़ के मौक़े पर चाहे इबादत का हो या आम ज़िन्दगी का, काला, गोरा और गुलाम आका हाकिम महकूम एक साथ कान्धे से कान्धाा मिला कर खड़े होते हैं।

मुसाबाते एहतिरामे इंसानी का यह पहला ऐलान था इससे मिलता जुलता ऐलान भी उसके तरह सौ साल बाद दुन्या की मौजूदा मुत्तहिदा कौंसिल यानी मुत्तहिदा अक़वाम ने इख़्तियार किया, इस्लामी ऐलान से क़ब्ल रंग नस्ल की बुन्याद पर जो जुल्म गैर मुसलमान कौमों में जारी था उसको रोकने की यह कोशिश की गयी, जिस पर इस्लामी सोसाइटी चौदह सौ साल से खास हद तक अमल कर रही है।

दूसरा अहम तरीन

ऐलान आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सूद को नाजाइज़ करार देने का फरमाया कि जिसको दौलत मन्द शख्सियात ने बिला मेहनत हासिल होने वाली मनफ़अ़त का जरीआ़ बना रखा था, और उसके जरीए ग़रीबों की ग़रीबी की मजबूरी से फायदा उठाने की खातिर दुन्या में बड़े ज़ुल्मों जियादती का जरीआ़ बना रखा था, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसका सिलसिला खत्म फरमाया और इसकी पहल अपने महब्बत करने वाले चचा हज़रत अब्बास रज़ि0 के सूदी मनाफेअ़ को यकलख़्त बन्द करने से की।

तीसरा ऐलान यह किया कि इंसानों के रंगों नस्ल के फ़र्क़ की बिना पर जो ज़ुल्म और तफ़रीक़ चल रही थी उसको ख़त्म किया और इस सिलसिले में खुद अपने ख़ानदान कुरैश को अरबों में क़बाइली सतह पर जो बर्तरी हासिल थी उसकी भी परवाह नहीं की और मुसलमानों को हुक्म दिया कि वह आपस में भाईयों की तरह ज़िन्दगी गुज़ारें और आपस में और तआ़वुन का रब्त रखे, कोई किसी की जान को पामाल और बेआबरू न करे इसको इस तरह ममनूअ़ फरमाया जिस तरह हज़ के मौके पर मुतअ़दिद चीजें ममनूअ़ की गईं, कि उसकी हैसियत भी इबादत जैसी है कि जिसमें कोताही करने से खुदा की तरफ से सज़ा मिलती है, इस तरीक़े से इस्लाम के दाइमी दस्तूर में इंसानी मुसाबात और अक़ीदा व दीन में आपस में एक दूसरे के साथ शरीक होने के साथ साथ एक दूसरे के बुन्यादी हुकूक में भी एक दूसरे के हक़ को तस्लीम करने और उसके अदा करने का जिम्मेदार बनाया, कअ़बा के इर्दगिर्द जमा हो कर रंग व नस्ल व ज़ुबान के फ़र्क़ को नज़र अन्दाज़ करते हुए आपसी मसाबात व वहदत का इज़हार करे उसी तरीक़े को ज़िन्दा और पायदार किया जिसकी आवाज़ उनके जद्देअअ़ला हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने रब के हुक्म से लगाई थीः

तर्जुमाः *''लोगो में हज़ का एलान कर दो लोग पैदल व सवारी पर तुम्हारे यहां आएंगे...''*

और यह ऐलान फरमाया कि अरब को या ग़ैर अरब सफेद फाम हो या सुर्ख़ फाम या सियाह फाम, सब बराबर हैं, अगर किसी को बरतरी हासिल है तो उसकी नेक सिफात की बिना पर होगी।

मिना व अराफ़ात में पूरी इंसानियत के लिए पैग़ामः-

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम परवरदिगारे आलम और अल्लाह रब्बुल आलमीन की तरफ से पूरी इंसानियत को सलाह व फलाह के रास्ते पर लाने के लिए नबी बनाए गये, जिन्नो इन्स का जो भी फर्द जिस जगह और जहां कहीं ताक़ियामत होगा वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रहनुमाई का मोहताज़ है, उसके लिए कामयाबी और सुर्खरूई का रास्ता व सामान उसी में है कि वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबवी तालीमात पर अमल पैरा हो

कर ज़िन्दगी बसर करे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी वफात से तीन माह पहले अ़रफ़ात के मैदान में और मिना के क़ियाम में पूरी इंसानियत को जीने का तरीक़ा सिख़लाया, ऐसा जिसमें कोई इंसान दूसरे इंसान के लिए कांटा न बने, ख़ून ख़राबे से दूर रहा जाए, बालादस्ती इस्लामी तालीमात की रहे, अरफ़ात के खुतबे के मुतअल्लिक़ मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली नदवी लिखते हैं:—

"उसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस्लामी बुन्यादों को वाजेह़ किया, और शिर्क वह जिहालत की बुन्यादें मुनहदिम कर दीं, उसमें उन तमाम हराम चीज़ों की आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तहरीम फरमाई जिनके हराम होने पर तमाम मज़ाहिब व अक़वाम मुत्तफिक़ हैं, और वह हैं नाहक़ ख़ून करना, माल मसब करना और आबरू रेज़ी, जाहिलीयत की तमाम बातों और मुरव्वजा कामों को अपने कदमों के नीचे पामाल कर दिया, जाहिलियत का सूद कुल का कुल आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़त्म फरमा दिया और उसको बिलकुल बातिल क़रार दिया, औरतों के साथ हुस्ने सुलूक़ की तल्क़ीन की और उनके जो हुकूक़ हैं नीज़ उनके ज़िम्मे जो हुकूक़ हैं उनकी तौज़ीह ख़ुराक और लिबास नान नफ्क़ा उनका हक़ है, उम्मत को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किताबुल्लाह के साथ मज़बूती से वाबस्ता रहने की वसीयत की और अपने को अच्छी तरह वाबस्ता रखेंगे, गुमराह न होंगे"।

"मिना के खुत्बा में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यौमुन्नह़र की हुरमत से आगाह किया, और अल्लाह तआ़ला के नज़दीक उस दिन की जो फजीलत है उसको बयान किया, दूसरे तमाम शहरों पर मक्का की अफज़लीयत व बरतरी का जिक्र किया, और जो किताबुल्लाह की रौशनी में उनकी क़ियादत करे उसकी इताअ़त व फरमांबरदारी उन पर वाजिब क़रार दी।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी तल्क़ीन फरमाई की देखो मेरे बाद काफिरों की तरह न हो जाना जो एक दूसरे की गर्दन मारते रहते हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी हुक्म दिया कि यह सब बातें दूसरों तक पहुंचा दी जाएं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी इर्शाद फरमाया कि अपने रब की इबादत करो, पांच वक़्त की नमाज़ पढ़ो, एक महीने (रमज़ान) के रोज़े रखो, और अपने उलुल अम्र की इताअ़त करो, अपने रब की जन्नत में दाख़िल हो जाओगे, उस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों के सामने अलवदाइया कलमात भी कहे और उसी वजह से उस हज का नाम हिज्जतुल वदाअ पड़ा।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन इंसानियत

नवाज़ बातों के साथ साथ यह भी सिखाया कि सब इंसान खुदाए वाहिद के बन्दे हैं और खुदा उन सब का रब और पालनहार है, उसको राज़ी करके ही ज़िन्दगी का चैन व सुकून मिलता है, इसलिए उसके बन्दों के लिए ज़रूरी है कि अपनी ज़रूरत और तक्लीफ में उसको ही पुकारें, और सिर्फ उसी से इल्तिजा करें, और खुद हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हर मौक़े पर दुआ करके दुआ का तरीक़ा भी सिखाया।

मौलाना सय्यिद सुलैमान रहमतुल्लाह अलैहि कअ़बा की मरकज़ीयत और वहां अमल में आने वाली आलमी इंसानी वहदत और उसके लामहदूद पैग़ाम अम्नो सलामती पर रौशनी डालते हुए रक़्मतराज़ हैं:

''ख़ानए कअ़बा इस दुन्या में अर्शे इलाही का साया और उसकी रहमतों और बरकतों का नुक़्तए क़िदम है, यह वह आइना है जिसमें उसकी रहमत व ग़फ़्फारी की सिफतें अपना अक्स डालकर तमाम कुर–रए–अर्ज़ को अपनी शुआओं से मुनव्वर करती हैं, यह वह मम्बा है जहां से हकपरस्ती का चश्मा उबला और उसी ने तमाम दुनया को सैराब किया, यह रूहानी इल्मो मअ़रिफत का वह मतलअ़ है जिनकी किरणों से ज़मीन के ज़र्राज़र्रा को दरख्शां किया, और यह वह जग़राफी शीराज़ है जिसमें मिल्लत के वह तमाम अफराद बन्धे हुए हैं जो मुख्तलिफ मुल्कों और अकल्लियतों में बसते हैं, मुख़्तलिफ जुबाने बोलते हैं, मुख़्तलिफ लिबास पहनते हैं, मुख्तलिफ तमद्दुनों में ज़िन्दगी बसर करते हैं। मगर वह सबके सब बावजूद इन फित्री इख़्तिलाफात और तबई इम्तियाज़ात के एक ही खानए कअ़बा के गिर्द चक्कर लगाते हैं और एक ही क़िब्ला को अपना मरक़ज़ समझते हैं, और एक ही मक़ाम को उम्मुल कुरा मान कर वतनीयत, क़ौमियत, तमद्दुन व मअ़ाशिरत, रंगो रूप और दूसरे तमाम इम्तियाज़ात को मिटा कर एक ही वतन एक ही क़ौम (आले इब्राहीम) एक ही तमद्दुन व मअ़ाशरत (मिल्लते इब्राहीमी) एक ही जुबान (अ़रबी) में मुत्तहिद हो जाते हैं और यह वह ब्रादरी है जिसमें दुन्या की तमाम कौमें और मुख़्तलिफ मुल्कों के बसने वाले जो वतनीयत और कौमीयत के लफ्ज़ों में गिरफ्तार हैं, एक लम्हा और एक आन में दाखिल होते हैं, जिससे इंसानों की बनाई हुई तमाम ज़ंजीरें और कैदें और बेड़ियां कट जाती हैं, और थोड़े दिन के लिए अर्सए हज में तमाम क़ौमें एक मुल्क में, एक लिबास में (एहराम में) एक वज़अ़ में दोश बदोश एक क़ौम बल्कि एक खानवादह की ब्रादरी बन कर खड़ी होती हैं, और एक ही बोली में खुदा से बातें करती हैं, यही वहदत का वह रंग है जो उन तमाम

माद्दी इम्तियाज़ात को मिटा देता है जो इंसानों में जंगों जदल और फित्ना व फसाद के अस्बाब हैं, इसलिए यह हरमे रब्बानी न सिर्फ इस माने में अम्न का घर है, कि यहां हर क़िस्म की खूंरेज़ी और जुल्मो सितम नारवा है, बल्कि इस लिहाज़ से भी अम्न का घर है कि तमाम दुन्या की क़ौमों की एक ब्रादरी काइम करके उनके तमाम ज़ाहिरी इम्तियाज़ात को जो दुन्या की बदअम्नी का सबब है, मिटा देता है।

लोग आज यह ख्वाब देखते हैं कि क़ौमीयत व वतनीयत की तंगनाइयों से निकल कर व इंसानी ब्रादरी के वुसअ़त आबाद में दाखिल हों मगर मिल्लते इब्राहीमी की इब्तिदाई दावत और मिल्लते मुहम्मदी की तज्दीद पुकार ने सैकड़ों, हज़ारों बरस पहले उस ख्वाब को देखा और दुन्या के सामने उसकी ताबीर पेश की, लोग आज तमाम दुन्या के लिए एक वाहिद जुबान (इस्प्रिन्टो) की ईजाद व कोशिश में मसरूफ हैं, मगर ख़ानए कअ़बा की मरकज़ीयत के फैसले ने आले इब्राहीम के लिए मुद्दते दराज़ से इस मुश्किल को हल कर दिया है''।

रसूसुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने इस हज में जो दुआएं की वह बहुत मुअस्सिर और दिल की गहराइयों से निकलीं, वह एक तरफ अदब व बलाग़त का शाहकार हैं, दूसरी तरफ उनसे उनके अल्लाह तआला के दरमियान तअ़ल्लुक़ की कैफियत पूरी तरह दूसरों पर अ़यां हो जाती हैं, वह बावजूद अपने परवरदिगार के मुन्तख़ब व महबूब बन्दा और उसके अ़जीमुल मरतबत पैग़म्बर होने के अपने को किसी क़द्र हक़ीर और नातवां, बेकस और मोहताज समझते हैं और मुश्किलकुशां व हाजतरवां सिर्फ अल्लाह तआ़ला को ही जान कर उस पर कैसा यक़ीन कामिल व ग़ैर मुतजलजल ऐतिमाद रखते हैं।

ख़ासतौर पर वकूफे अरफा में आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो दुआएं फरमाईं वह बड़ी असर अंगेज़ हैं, वह जुमा का दिन था, अव्वल वक़्त नमाज़े जुहर अदा की और अस्र की नमाज़ भी मिलाई, इस बार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अरफात में जुह्र व अस्र की नमाज़ें मिला कर पढ़ना सुन्नत फरमाया, फिर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कई घण्टे मुसलसल मसरूफ ब दुआ रहे, यह सिलसिला गुरूब आफताब यानी मग़रिब तक दुआ व मुनाजात, तजर्रो इब्तिहाल और आजिज़ी, बेबसी, दरमान्दगी, व बेचारगी के इजहार में मुनहमिक रहे, अपने रब, रब्बुल आलमीन से इस तरह मांग रहे थे जैसे भिखारी मांगता है, सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

❖❖❖

तड़प

—नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

बात शिब्ली रह0 की है। ये पहले किसी रियासत के गवर्नर थे। शाही शान–शौकत छोड़ कर अल्लाह से लौ लगा बैठे और ऐसा दिल लगाया कि दुन्या के लिए मिसाल बन गए।

उनके गवर्नरी छोड़ने का इतना सा किस्सा है कि एक बार बादशाह ने उनके कार्यों से खुश हो कर एक शाही जोड़ा भेंट किया। जब वह महल से निकलने लगे तो छींक आ गई और उन्होंने शाही जोड़े के आस्तीन से नाक साफ कर ली।

बस क्या था, चापलूस दरबारियों ने बादशाह के कान भरे कि आपके दिये जोड़े का सम्मान नहीं किया, भला कोई शाही जोड़े का ऐसा अपमान करता है।

मूर्ख बादशाह ने चापलूसों की बातों में आ कर उन्हें पदच्युत कर डाला। बस यही बात शिब्ली को लग गई कि शाही जोड़े के अपमान का जब ये दण्ड है तो यहां तो प्रतिदिन मानवता को अपमानित और सच व हक के लिबास को तार–तार किया जाता है। यहीं से शिब्ली रह0 दरबार का ताम झााम छोड़ कर महान संत हज़रत जुनैद बगदादी रह0 की सेवा में रहने लगे। हज़रत जुनैद रह0 ने उन्हें ऐसा प्रशिक्षित किया कि वह शिबली को अपने सिर का ताज कहने लगे।

एक बार का किस्सा है कि हज़रत शिब्ली ने बाज़ार से एक बोरी गेहूं खरीदा और कांधे पर लाद लिया। बोरी भारी थी, इसलिए रास्ते में हांफ–हांफ जाते और बीच–बीच में बोरी रख कर सुस्ताने लगते। करते–करते किसी तरह सुबह के निकले शाम को घर पहुंचे। घर पहुंच कर थोड़ा सुस्ताया, आराम किया। जब बोरी खोली तो संयोग से गेहूं के दानों के बीच में एक चींटी बेचैन फिरती दिखाई दी। हज़रत शिब्ली बड़ी देर तक उसे तकते रहे। सहसा ध्यान आया कि ये चींटी इसलिए बेचैन फिरती दिखाई दे रही कि वह बोरी में आ जाने के कारण अपने घर से दूर हो गई है। अभी तक चींटी बेचैन थी, अब शिब्ली बेचैन हो उठे। कहां थकावट से ऊँघने की नौबत थी अब सहसा नीं गायब। न खाने का दिल चाहे न पीने का। बार–बार उनके मन में यही आता कि अल्लाह की सृष्टि के एक जीव को घर से बे घर कर दिया। जैसे तैसे रात गुजारी और पौ फटते ही सावधानीपूर्वक चींटी को गेहूं के बहुत से दानों समेत बाहर निकाला तथा दौड़ते हांफते उस जगह पहुंचे जहां बाज़ार से गेहूं खरीदा था। वहां वह जगह तलाशी जहां कल गेहूं की बोरी रखी थी। फिर बड़ी सावधानी से दानों समेत चींटी को वहां डाल दिया, जाहां ढेर सारी चींटियां घूम–फिर रही थीं।

हज़रत शिब्ली अपने मुरीदों से कहा करते थे अल्लाह की सृष्टि का कभी दिल न दुखाओ, चाहे वह चींटी ही क्यों न हो। क्योंकि यदि तुमने चींटी को कमज़ोर समझ कर मसल दिया तो याद रखो कि अल्लाह तुम्हारे मुक़ाबले बड़ा बलशाली और जो चाहे कर सकता है।

इस्लाम दिल दुखाने से सख्ती से रोकता है। सभी सभ्य समाज में भी इसकी मनाही है, मगर आज तो बड़ी बदतर स्थिति है, किसी का दिल दुखे, तड़पे–रोये, किसी को कोई परवाह नहीं। हद तो ये हो गई कि राष्ट्रवाद और देश भक्ति के नाम पर देशवासियों का दिल दुखाया जाता है। ''मैं देशभक्त तू गद्दार'' की तू–तू मैं–मैं ने पूरे देश को कथित रूप से संदिग्ध बना दिया है। जो तिरंगा हमारी आन बान शान और एकता का प्रतीक है, उसी झंडे के डण्डे से बेगुनाहों का सर फोड़ा जाता है और उनकी माओं का दिल दुखाया जाता है। इसी दुन्या के एक शिब्ली थे कि उन्हें एक चींटी की बेचैनी गवारा न हुई और हमारे देश के भटके हुए कुछ लोग जिन्हें किसी भी जान से खेलने में झिझक नहीं होती। ◆◆

नमाज़ की हक़ीकत.....

तर्जमाः– *''बड़ी खराबी और तबाही आने वाली है उन नमाज़ पढ़ने वालों के लिए जो अपनी नमाज़ों से गफलत व बे परवाई करने वाले हैं''। (अल–माऊन)*

तर्जमाः– *''फिर जानशीन हुए उन के नालाइक़ लोग जिन्होंने बरबाद किया नमाज़ों को और चले अपनी नफ्सानी ख्वाहिशों पर, पस यह जल्द ही देखेंगे हलाकत व बरबादी''।*

(मरयमः 59)

पस आज हम पर जो जिल्लत व इदबार मुसल्लत है वह हमारे इसी इजतिमाई जुर्म की सजा है कि हम नमाज़ों की और इसी तरह दूसरे रवाबिते इलाहिया की नाकदरी कर रहे हैं और उनके बारे में ग़फलत व लापरवाई बरत रहे हैं।

अलगरज़ हमारी इस मग़्जूबीयत और मक्हूरीयत का बाइस नमाज़ें नहीं, बल्कि नमाज़ों की नाकद्री और उनकी तरफ से गफलत व लापरवाई हमारी इस ज़बूं हाली का बाइस है और यह ऐसा ही है जैसे कि हम मुसलमान होने के बावजूद जो जिल्लत व अज़ाब की जो जिन्दगी गुजार रहे हैं तो उस जुर्म की पादाश है कि हम इस्लाम को क़बूल करने के बावजूद उस का हक़ अदा नहीं कर रहे हैं बल्कि अमलन उसके बड़े हिस्से से मुन्हरिफ हैं और इस जुर्म की सजा अल्लाह के यहां अज़ल से यही मुकर्रर है।

अल्लाह तआला फरमाते हैं–

तर्जमाः– *''अल्लाह का यही दस्तूर रहा है उन लोगों में भी जो उन से पहले गुजर चुके हैं, और आप न पाएंगे अल्लाह के दस्तूर में रद्द व बदल''।*

(अल–अहजाबः 62)

फारसी शाइर कहता हैः–

खुर्मा न तवां याफ़्त अजां ख़ार कि किश्तेम
दीबा न तवां बाफ़्त अजां पश्म कि रिश्तेम

मफ्हूमः–हम ने काँटों की खेती की है यानी बबूल लगाए हैं उनसे हम को खुर्मा नहीं मिल सकता है।

हमने ऊन काटा है उससे हम देबा (एक किस्म का रेशमी कपड़ा) नहीं बुन सकते।

जारी.....

❖❖❖

उर्दू सीखये

—इदारा

हिन्दी जुम्लों की मदद से उर्दू जुम्ले पढ़ये

मदीना तय्यिबा में अल्लाह के नबी की मस्जिद है।
مدینہ طیّبہ میں اللہ کے نبیؐ کی مسجد ہے۔
उसी मस्जिद में एक तरफ प्यारे नबी की क़ब्रे मुबारक है।
اسی مسجد میں ایک طرف پیارے نبیؐ کی قبر مبارک ہے۔
प्यारे नबी की क़ब्र के पीछे हज़रत अबू बक्र की कब्र है।
پیارے نبیؐ کی قبر کے پیچھے حضرت ابوبکرؓ کی قبر ہے۔
प्यारे नबी के पांव की तरफ हज़रत उमर की क़ब्र है।
پیارے نبیؐ کے پاؤں کی طرف حضرت عمرؓ کی قبر ہے۔
इन क़ब्रों के चारों तरफ दीवारें हैं।
ان قبروں کے چاروں طرف دیواریں ہیں۔
इन दीवारों की छत पर हरा गुमबद है।
ان دیواروں کی چھت پر ہرا گنبد ہے۔
उसी को गुम्बदे ख़ज़रा कहते हैं।
اسی کو گنبدِ خضرا کہتے ہیں۔
दक्खिन वाली दीवार में चार गोल सूराख़ हैं।
دکّھن والی دیوار میں چار گول سوراخ ہیں۔
पश्चिम किनारे वाले सूराख़ के सामने कुछ नहीं है।
پچھّم کنارے والے سوراخ کے سامنے کچھ نہیں ہے۔

जारी.....